वाप्कोस दर्पण

अंक 109

अप्रैल - सितम्बर, 2023

रजनीकांत अग्रवाल
अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक
वाप्कोस लिमिटेड

सन्देश

''**हिंदी दिवस**'' के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

14 सितम्बर भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण व स्मरणीय दिन है क्योंकि 14 सितम्बर 1949 को भारत के संविधान ने हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था। इसलिए प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर ''**हिन्दी दिवस**'' के रूप में मनाया जाता है।

भाषा न केवल हमारे विचारों को प्रकट करने का माध्यम होती है अपितु इसके माध्यम से एक-दूसरे के साथ पारस्परिक सदभाव को भी बढ़ावा मिलता है। हमारा देश भाषा के मामले में अत्यंत समृद्ध है। विपुल शब्द भण्डार से युक्त हिंदी एक व्यवहारिक, सरल एवं जीवंत भाषा है। वाप्कोस एक तकनीकी सरकारी उपक्रम है इसलिए राजभाषा नीति संबंधी प्रावधान हमारी कम्पनी पर भी लागू होते हैं। अत: हिंदी का प्रयोग बढ़ाना हम सबका नैतिक उत्तरदायित्व है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार इस वर्ष भी वाप्कोस में 14 - 29 सितम्बर 2023 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया जा रहा है। मैं सभी कार्मिकों से आशा करता हूं कि हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित की जाने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं व योजनाओं में बढ़चढ़ कर भाग लें और राजभाषा हिंदी के विकास में अपना सहयोग देते हुए अपना सरकारी कामकाज अधिक से अधिक हिंदी में करें। हिंदी में काम करने की भावना केवल हिंदी पखवाड़े तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए, अपितु पूरे वर्ष राजभाषा हिंदी में काम करना चाहिए।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुन: मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

''जय हिंद''

14 सितम्बर 2023

(रजनीकांत अग्रवाल)

वाप्कोस दर्पण

अंक 109
अप्रैल - सितम्बर, 2023

संरक्षक
आर. के. अग्रवाल
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

सह-संरक्षक
अनुपम मिश्रा
निदेशक (वाणि. व मा.सं.वि.)
एवं अध्यक्ष, विराकास

मुख्य संपादक
प्रदीप कुमार
वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक (व्य.वि.एवं प्रशा.)/
प्रमुख (रा.भा.का.)

संपादक
दलीप कुमार सेठी
उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.)

सहयोग
शारदा रानी
वरिष्ठ सहायक

गौरव राघव
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने है। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नही है।)

केवल आन्तरिक वितरण हेतु

इस अंक में	पृष्ठ संख्या
संदेश	1
सम्पादकीय	2
राजभाषा गतिविधियां	3-7
(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त लेख)	8-10
''प्राकृतिक आपदाएं कितनी प्राकृतिक कितनी मानवजनित''	11-13
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), गुरूग्राम की दिनांक 19.07.2023 को बैठक का आयोजन	14-15
सोशल मीडिया में जलवा बिखेरती हिन्दी	16-21
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुरूग्राम के तत्वावधान में वाप्कोस लिमिटेड द्वारा हिन्दी निबंध प्रतियोगिता	22
संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा किए गए राजभाषाई निरीक्षण	23-25
प्रथम मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी	26-28
वसुधैव कुटम्बकम्	29-30
वर्क फ्रोम होम	31-32
हिन्दी का स्वाभिमान: दरार से आती रोशनी	33-35
वर्षा जल संचय की अनिवार्यता	36-39
अच्छे स्वास्थ्य के लिए	40-41
जिन्दगी का तजुर्बा - कविता	42
जीवन में 7 का पहाड़ा (टेबल) का बहुत महत्व है,पर इसकी जानकारी कम लोगों को रहती है	43
पापा (पिता) को समझने में पूरे 60 साल एक पुत्र की नजर में उम्र के अलग-अलग पड़ाव पर पिता	44
राजभाषा संबंधी कुछ आवश्यक जानकारी	45

संदेश

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

वाप्कोस दर्पण गृह पत्रिका के माध्यम से अपने विचार आप सभी तक पहुंचाते हुए मैं अत्यंत हर्ष महसूस कर रहा हूं। हिंदी भारत की राजभाषा ही नहीं अपितु आम लोगों के बीच संवाद करने की सम्पर्क भाषा भी है। भाषा विचारों को आदान-प्रदान करने का एक माध्यम भी है। हिंदी के इसी महत्व को देखते हुए इसे संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था।

यह बढ़े हर्ष का विषय है कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा 14-15 सितम्बर 2023 को हिंदी दिवस समारोह एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन पुणे में किया गया जिसमें देश के कोने-कोने से भारी संख्या में अधिकरियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर वाप्कोस से भी कई कार्मिकों द्वारा सहभागिता की गई।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार वाप्कोस में 14-29 सितम्बर 2023 तक "हिंदी पखवाड़ा" मनाया गया। इस दौरान कार्यालय के कामकाज में हिंदी के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए कार्मिकों हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और प्रोत्साहन योजनाएं भी लागू की गई। इन प्रतियोगिताओं में कार्मिकों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। मेरा सभी कार्मिकों से अनुरोध है कि हिंदी में काम करने की भावना केवल हिंदी पखवाड़े तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए बल्कि पूरे वर्ष हिंदी में कार्य करना चाहिएं ताकि हम अपने दायित्वों को निभा सकें।

अनुपम मिश्रा

(अनुपम मिश्रा)
निदेशक (वाणिज्य व मा.सं.वि.) एवं
अध्यक्ष, विराकास, वाप्कोस

सम्पादकीय

"हिंदी दिवस" के इस पावन अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

"वाप्कोस दर्पण" गृह पत्रिका का अंक 109 अप्रैल-सितम्बर 2023 आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त खुशी का अनुभव हो रहा है। भारत विविध संस्कृतियों और भाषाओं का देश है। हिंदी ने हमारी सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत को न केवल संजोए रखा है बल्कि उसके विकास में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह एक ऐसी भाषा है जिसके माध्यम से हम अपनी बात किसी को भी बड़ी आसानी से समझा सकते हैं। यह समाज और जीवन की जरूरतों से जुड़ी एक सशक्त और विकासशील भाषा है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में उल्लेख किया गया है कि "भारत संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी"। राजभाषा का मतलब है – सरकारी कामकाज की भाषा, अर्थात् भारत सरकार के अधीन सभी कार्यालयों के कामकाज की भाषा हिंदी है।

राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार के राजभाषा नीति संबंधी प्रावधानों का समुचित अनुपालन वाप्कोस में किया जा रहा है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार वाप्कोस में 14-29 सितम्बर 2023 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया, जिस दौरान कार्यालय के कामकाज में हिंदी के प्रयोग में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे हिंदी निबन्ध प्रतियोगिता, चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता, राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता तथा समूह "घ" कर्मचारियों के लिए श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कार्मिकों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

यह पत्रिका पाठकों का ज्ञानवर्धन करने के साथ-साथ नए पाठकों को भी अपनी ओर आकर्षित करेगी।

प्र० कुमार

(प्रदीप कुमार)

वरि.कार्यकारी निदेशक (व्य.वि. व प्रशा.)/

प्रमुख (रा.भा.का.)

राजभाषा गतिविधियां

- संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 23.06.2023 को वाप्कोस के लखनऊ कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

- दिनांक 16.06.2023 को वाप्कोस में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधिनियमों की जानकारी दी गई।

- दिनांक 22.06.2023 को श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में वाप्कोस की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुरुग्राम के तत्वावधान में वाप्कोस द्वारा दिनांक 28.06.2023 को "हिंदी निबंध प्रतियोगिता – नदियों में बढ़ता प्रदूषण" का आयोजन किया गया जिसमें नराकास, गुरुग्राम के विभिन्न सदस्य कार्यालयों से 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

- संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 10.05.2023 को वाप्कोस के पटना कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

- संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 13.05.2023 को वाप्कोस के पंचकुला कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण अमृतसर में किया गया।

- संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 24.05.2023 को वाप्कोस के देहरादून कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

- वाप्कोस में अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक के मार्गदर्शन में 14-29 सितम्बर 2023 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। कम्पनी के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध किया गया कि वे अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें ताकि भविष्य में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कम्पनी में अनुकूल वातावरण बनाया जा सके। हिन्दी पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई:-

❖ हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता

दिनांक 19.09.2023 को वाप्कोस के गुरुग्राम कार्यालय में "प्राकृतिक आपदाएं कितनी प्राकृतिक कितनी मानव जनित" विषय पर हिंदी निबन्ध प्रतियोगिता से प्रतियोगिताओं का शुभारंभ किया गया जिसमें कार्मिकों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया।

❖ चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता

दिनांक 20.09.2023 को "चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया जिसमें कार्मिकों को चित्र देखकर अपने विचार लिखने थे।

हिन्दी प्रजातंत्र की भाषा, जो पूरी करती हमारी आशा
इसे सीखना बहुत सरल है, इसलिए यह है राजभाषा।
फिर भी न जाने क्यों अब तक, अँग्रेजी का खेल-तमाशा
हिन्दी प्रजातंत्र की भाषा, हिन्दी प्रजातंत्र की भाषा।

❖ राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता

इसी क्रम में दिनांक 21.09.2023 को "राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कार्मिकों को राजभाषा हिंदी से संबंधित प्रश्न दिए गए थे।

❖ श्रुतलेख प्रतियोगिता (केवल समूह "घ" कर्मचारियों के लिए)

दिनांक 22.09.2023 को गुरुग्राम कार्यालय में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए "श्रुतलेख प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान "मौलिक स्व-रचित कविता लेखन प्रतियोगिता" के अन्तर्गत कार्मिकों से स्व-रचित कविताएं मंगवाई गई।

उक्त सभी प्रतियोगिताओं में कार्मिकों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं में भाग ले रहे कार्मिकों का वरि.कार्यकारी निदेशक (व्य.वि.व प्रशा.) प्रमुख (रा.भा.का.) द्वारा उत्साहवर्धन भी किया गया।

❖ हिन्दी पखवाड़े के दौरान उक्त प्रतियोगिताओं के अलावा निम्नलिखित दो योजनाएं भी लागू की गई:-

- ❖ विशेष अल्पकालिक राजभाषा नकद पुरस्कार योजना (टिप्पण/लेखन)
- ❖ हिन्दी आशुलिपि/हिन्दी टंकण में कार्य करने की विशेष अल्पकालिक नकद पुरस्कार योजना।

❖ हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर वाप्कोस के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक की ओर से एक "सन्देश" भी जारी किया गया।

❖ हिंदी पखवाड़े के दौरान दिनांक 26.09.2023 को वाप्कोस में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में जल शक्ति मंत्रालय के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) को आमंत्रित किया गया जिन्होंने कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधिनियमों की जानकारी दी तथा वाइस टाइपिंग का प्रशिक्षण भी दिया। इसके साथ-साथ उन्होंने कार्मिकों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वर्ष 2023-24 के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों के बारे में जानकारी दी।

❖ दिनांक 27.09.2023 को विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक वरि. कार्यकारी निदेशक (व्य.वि.व प्रशा.) /प्रमुख (रा.भा.का.) की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

❖ दिनांक 13.09.2023 को जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने हेतु वाप्कोस के पुणे कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

निरीक्षण के साथ-साथ उन्होंने हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया जिसमें उन्होंने कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधिनियमों की जानकारी दी तथा वाइस टाइपिंग का प्रशिक्षण भी दिया। इसके साथ-साथ उन्होंने कार्मिकों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वर्ष 2023-24 के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों के बारे में जानकारी भी दी।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 14 व 15 सितम्बर 2023 को हिंदी दिवस व तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन पुणे में किया गया। वाप्कोस से इस सम्मेलन में निम्नलिखित कार्मिकों ने भाग लिया:-

- श्री दलीप कुमार सेठी, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.)
- श्री राजेन्द्र कुमार, उप प्रबन्धक
- श्री शशांक राणा, कार्यालय प्रबन्धक
- श्री बालकृष्ण, परियोजना प्रबन्धक, पुणे कार्यालय
- श्रीमती रीता बर्मन, अपर मुख्य अभियंता, पुणे कार्यालय
- श्री रामदास कदम, कनि.सहायक, पुणे कार्यालय

- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्री दलीप कुमार सेठी, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 12.09.2023 को वाप्कोस के पुणे कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।
- संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 10.07.2023 को वाप्कोस के गांधीनगर कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण राजकोट (गुजरात) में किया गया।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुरुग्राम की वर्ष 2023-24 की प्रथम छमाही बैठक श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वाणिज्य व मानव संसाधन विकास) एवं अध्यक्ष, विराकास, वाप्कोस की अध्यक्षता में दिनांक 19.07.2023 को दोपहर 3.00 बजे गुरुग्राम कार्यालय के समिति कक्ष में आयोजित की गई।

(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त लेख)

फौजदार यादव
वरिष्ठ अभियन्ता (पावर विभाग)

प्रस्तावना :- प्रस्तुत चित्र को देखकर यह ज्ञात होता है कि इसमें आधुनिक युग की एक बहुत बड़ी महामारी (कहना उपयुक्त होगा) जोकि स्क्रीन समय का बच्चों, बड़ों बुजुर्गों में बढ़ना, मोबाइल फोन का अत्याधिक उपयोग करना, समाज से कटना, डिजिटल संसार में खोये रहना, सोशल मीडिया का अत्याध्कि उपयोग करना इत्यादि प्रदर्शि त करता है।

प्रस्तुत चित्र यह इंगित करता है कि आज के दौर में हम इस डीजिटल रूपी मायावी संसार में इस कदर खो गये हैं कि हम परिवार में एक साथ रहते हुये भी अन्जान की तरह रह रहे हैं। जैसा कि प्रस्तुत चित्र में हम यह देख सकते हैं कि एक ही घर में बाप-बेटा साथ रहते हुये भी खुशियां एक दूसरे में नही अपितु डीजिटल मायावी संसार में खोज रहे हैं। बड़े तो बड़े अपितु छोटे-छोटे बच्चे भी आजकल मोबाइल फोन, मोबाइल गेम्स की लत के गुलाम बन चुके हैं। इससे ना केवल उनका स्वास्थ्य, विकास पर भी बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ रहा है। इसलिए प्रस्तुत चित्र आजकल के दौर में बहुत ही प्रासंगिक है। आइये इसके दुष्प्रभावों और इससे बचने के तरीकों पर विचार करते हैं।

डीजिटल मीडिया, मोबाईल फोन के अत्यधिक उपयोग के दुष्प्रभावः-

1. **मानसिक दुष्प्रभावः** कई वैज्ञानिक प्रयोगों व सर्वे ने यह साबित कर दिया है कि जिन व्यक्तियों का मोबाइल स्क्रीन टाइम ज्यादा होता है, उनमें तनाव का स्तर बढ़ने और मोटापे संबन्धित बिमारियां होने का खतरा 20% तक बड़ जाता है।

   एक वैज्ञानिक सर्वे तो यह बताता है कि जो लोग सामाजिक साइटों जैसे- फेसबुक, इंस्टाग्राम इत्यादि में ज्यादा समय व्यतीत करते हैं, उनमें जिन्दगी के प्रति सकारात्मकता कम होती है और आत्महत्या की प्रकृति बढ़ सकती है।

   रात को सोने से 3 से 4 घण्टा पहले मोबाइल फोन का उपयोग बन्द कर देना चाहिए, अन्यथा यह हमारी नींद को अनियमित कर देता है। मोबाइल स्क्रीन से निकलने वाला नीला प्रकाश हमारे मिलोटेनिन हार्मोन को अनियन्त्रित कर देता है और इसके फलस्वरूप हमारी नींद अनियरमित हो जाती है। अनियमित निंद्रा हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए बहुत ही खतरनाक है। इससे हमें थकान, डिमेन्शिया और तनाव हो सकता है।

2. **शारीरिक दुष्प्रभावः** आपका मोबाइल स्क्रीन टाइम अगर बहुत ज्यादा है तो कहीं ना कहीं आप अपनी शारीरिक गतिविधियों को कम समय दे रहे हैं और देर तक बैठने की आदत मे गिरफ्त हो चुके हैं। इसके फलस्वरूप आप एक निष्क्रिय जीवन शैली अपनाने के करीब होते जा रहे हैं, जिसके फलस्वरूप आपके शरीर का मेटाबोलजिम कम होगा, मोटापा बढ़ेगा, मांसपेशियों की जकड़न बढ़ेगी और भविष्य में आप हाई शुगर, बीपी इत्यादि बीमारियों की गिरफ्त में होंगे।

   अध्ययन यह भी साबित कर चुके हैं कि अत्यधिक समय मोबाइल स्क्रीन पर गुजारने से नेत्र सम्बन्धी विकार और गर्दन की हड्डियों से सम्बन्धित विकारों की समस्या बढ़ी है। छोटे बच्चों में तो ऑखें तिरछी हो जाना सम्बंधी विकार भी देखने को मिले हैं।

3. **सामाजिक दुष्प्रभावः** आजकल बच्चे, बड़े, बुजुर्ग इस डीजिटल मायावी दुनिया में इस कदर फंस चुके हैं कि असली सामाजिक मेल-जोल को भूल चुके हैं। डीजिटल सोशल साइटस केवल अच्छाइयां ही साझा करती हैं, असल जिन्दगी की हकीकत को नहीं। इस छद्म खुशी को देखकर लोग उसी को सच मान बैठते है, जिसके फलस्वरूप उनमें निराशा, हताशा और आत्महत्या की प्रवृति बढ़ती जा रही है। सोशल मीडिया ने हमारे समाज में ये दुष्प्रभाव ला दिया है। बच्चे समाज में एक दूसरे से कम घुलमिल रहे हैं, जिससे उनका सामाजिक व मानसिक विकास अवरुद्ध हो रहा है।

   बच्चे बाहरी गेम, मोबाइल के कारण कम खेल रहे हैं, जिसके कारण उनका शारीरिक व सामाजिक विकास अवरुद्ध सा हो गया है। परिवार एक छत के नीचे रहते हुये भी एक दूसरे को समय नही दे पा रहे हैं, कारण उनका समय मोबाइल फोन सोशल मीडिया मे व्यतीत हो रहा है। इसके कारण आये दिन पारिवारिक कलह, द्वेष पनप रहे हैं। किसी भी रिलेशन या रिश्ते में आपको बातचीत और समय उतना देना होगा जोकि उसकी जरूरते हैं। अत्यधिक स्क्रीन टाइम के कारण लोग अपने लक्ष्यों दायित्वों को समयानुसार पूर्ण नही कर पा रहे जो कि सामाजिक रूप से उन्हें कही ना कही हीन भावना का शिकार बना रहा है।

बचाव के तरीके:-

1. **मजबूत इच्छाशक्ति एवं निर्णय:** जीवन आपका है, लक्ष्य आपके है, स्वास्थ्य आपका है, तो आपको ही यह तय करना होगा कि आप अपना समय कहा लगायेंगे। आप अपने लक्ष्यों को पाने के लिए वो कार्य करेंगे जो आपको सफल बनाये या फिर इस मायावी दुनिया के जंजाल में फंसकर अपना नुकसान। इसके लिए आपको अपनी इच्छाशक्ति एवं दृढ़ निर्णय दिखाना होगा और यह तभी होगा जब आपके लक्ष्य और सपने स्पष्ट होंगे।

2. **मोबाइल फोन का जरूरतमन्द उपयोग:** आपको मोबाइल फोन स्वास्थ्य, धन, रिश्ते सब कुछ सुधारकर दे सकता है और बिगाड़ भी सकता है। आपको इसकी जरूरत है कि हिसाब से प्रयोग में लाना चाहिए, जब और जैसी इसकी उपयोगिता हो। आपको यह जानना सीखना होगा कि आप जो समय मोबाइल स्क्रीन पर लगा रहे हो वो आपके लिए उपयोगी है या नही। जब आप ये संज्ञान में रखेंगे तो आपका समय स्वत: व्यवस्थित होगा।

3. **किताबों से दोस्ती :** पारिवारिक समय बाहरी व्यायाम और अपना सामाजिक दायरा आपको बढ़ाना होगा। उन सब क्रियाओं से आप स्क्रीन टाइम कम कर पायेंगे।

4. अपने मोबाइल प्रयोग और उपयोग टाइम को टाइम टेबल बना कर शनै: शनै: निगरानी करना और उसे अपने लक्ष्यों और सपनों के अनुसार कम करते जाना।

"अन्तत: परिवर्तन आपसे ही शुरू होता है।"

"प्राकृतिक आपदाएं कितनी प्राकृतिक कितनी मानवजनित"

(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त लेख)

फौजदार यादव
वरिष्ठ अभियंता (पावर विभाग)

प्रस्तावना: आपदा शब्द ज्योतिष विज्ञान से लिया गया है जिसका भाविक अर्थ होता है जब ग्रहों की स्थिति उचित नही हो, और उसके फलस्वरूप होने वाले कष्ट एवं क्षति। प्राकृतिक आपदा का शाब्दिक अर्थ है कि प्राकृतिक रूप से घटित होने वाली घटना से उत्पन्न हुये धन, जन व समाज की क्षति। उदाहरण के लिए भूकम्प, ज्वालामुखी सुनामी के कारण हुये जान-माल का नुकसान। प्राकृतिक आपदा प्रकृति के द्वारा स्वयं उत्पन्न की गयी घटना हो सकती है एवं मानव के हस्तक्षेप के कारण प्रकृति के विकराल विध्वंश का कारण भी हो सकती है। आइये विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं के कारण एवं उसके मानवजनित होने के कारणों का विश्लेषण करते हैं।

प्राकृतिक आपदाएं: निम्नलिखित प्राकृतिक आपदाएं सदियों से प्रकृति द्वारा प्रकृति का संतुलन बनाये रखने के लिए की जाती रही है। परन्तु प्रकृति द्वारा संतुलन बनाने की घटना, आपदा की श्रेणी में नही आती, अपितु जब मानव दखल होता है, तभी वो प्राकृतिक घटना आपदा में परिवर्तित होती है। आइये बिन्दुवार इन प्राकृतिक घटनाओं का विश्लेषण करते हैं:-

1. **भूकम्प :** भूकम्प पृथ्वी की सतह के नीचे विद्यमान टेक्रोनिक प्लेटों के घर्षण की प्रक्रिया से उत्पन्न एक गतिविधि है। प्लेटों का खिसकना एक सतत प्रक्रिया है। भूकम्प प्राचीन काल में आया करते थे, परन्तु निर्जन स्थानों पर भूकम्प एक आपदा के रूप में परिवर्तित नहीं होते थे।

   मानवजनित : आधुनिक युग की बात करे तो भूकम्प और इससे होने वाली आपदा को मानव-हस्तक्षेप ने कई गुणा बढ़ा दिया है। आज के दौर में शहरीकरण, अंधाधुन बढ़ती जनसंख्या ने भूकम्प से होने वाली क्षति को कई गुणा बढ़ा दिया है। गुजरात का आया भूकम्प हो या फिलहाल में आया टर्की का भूकम्प। मानवनिर्मित कुछ कारण जो भूकम्प को बढ़ावा दे रहे है।

   विशालकाय बांधो का निर्माण : अवैज्ञानिक और उचित जगह का चुनाव ना कर बांध बनाने से प्लेटों पर दबाव ज्यादा बढ़ने से भूकम्प के मामले और तीव्रता में बढ़ोतरी देखी जा रही है। तरल पदार्थो का मृदा में अधिक मात्रा में विच्छेदन : तेल और गैस कम्पनियां, पृथ्वी के धरातल में कृत्रिम तरल पदार्थों को भेज रही हैं, उन रासायनों से पृथ्वी के प्लेटों की प्राकृतिक संरचना बिगड़ने से भूकम्प की अधिकता की सम्भावना बड़ रही है।

2. **बाढ़ :** बाढ़ प्राकृतिक रूप से अधिक वृष्टि का परिणाम है, जिसमें ग्लेशियर का पिघलना भी अपना योगदान देता है।

मानवजनित : मानव के हस्तक्षेप से ये बाढ़ भीषण आपदा का रूप धारण कर रही है। मानव नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को अवरूध कर रहा है। अन्धाधुन बालू खनन, पेड़ो की कटाई, नदियों के प्रवाह मार्ग में शहरीकरण इत्यादि ऐसे कारण है जिनके कारण बाढ़ अपना भीषण रूप दिखा रही है।

3. **तूफान एवं चक्रवात :** तूफान व चक्रवात का आना एक प्राकृतिक घटना है , परन्तु मानव-हस्तक्षेप ने उस प्राकृतिक घटना को विकराल रूप दे दिया है। मानव गतिविधियों के कारण आज ग्रीन-हाउस गैसों का उत्सर्जन चरम पर है। फलस्वरूप हमारे वायुमण्डल का तापमान ब्रढ़ता जा रहा है। इस बढ़ते तापमान के कारण दक्षिणी ध्रुव और भूमध्य रेखा के क्षेत्रों का तापमान में अन्तर आ रहा है। तापमान वृद्धि के कारण समुद्र तल और उसकी सतह का तापमान बढ़ रहा है। समुद्र के आस-पास आर्द्रता बढ़ रही है। ये बढ़ता हुआ तापमान और आर्द्रता चक्रवात की तीव्रता को बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। फैरेवियन और अमेरिकन (मध्य) देश इस तीव्र चक्रवात की चपेट के निरन्तर शिकार हो रहे हैं और वहां भारी धन और जन की हानि हो रही है।

4. **बादल का फटना :** जब पहाड़ो पर गर्म और नम हवा मिलते हैं तो अति वृष्टि वर्धक बादल बनते है। लेकिन विगत कुछ वर्षो में बादल के फटने की घटनाओं में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए उत्तराखण्ड और केदारनाथ में बादल फटने से काफी भारी मात्रा में नुकसान हुआ। मानव हस्तक्षेप ने प्राकृतिक संतुलन को ऐसा असंतुलित किया है कि जो हवायें इन बादलों को ऊपर पहुंच के उन्हें विघटित कर दिया करती थी वो अब उतनी ऊपर और वेग से पहुँच नहीं पाती और फलस्वरूप बादल फटने की घटना को बढ़ावा देती है।

5. **मृदा अपरदन, हिम स्खलन एवं मृदा स्खलन:** ये प्राकृतिक सी दिखने वाली आपदाएं पूर्णरूप से मानवजनित है। अन्धाधुन पेड़ों की कटौती, अनियमित खेती, पहाड़ों के पेट में बारूद डालकर उन्हें तोड़ना, पहाड़ो की छाती काटकर रोड़ बनाना इत्यादि ऐसे कारण है जिनके फलस्वरूप मृदा ढ़ह रही है, बर्फ और ग्लेशियर पिघल रहे हैं। मृदा की ऊपरी परत को पेड़ पौधे पकड़े और जकड़े रहते हैं किन्तु वनों को काटकर ये वन और आसपास की मृदा को नुकसान किया जाता है। फलस्वरूप लाखों जिन्दगियां इससे प्रभावित होती है। मिट्टी की ऊपरी परत ना होने से पानी का प्रवाह तेज गति से नदियों और अन्य पानी के स्त्रोतों में जमा होता है जो बाढ़ को बढ़ावा देते हैं। ग्लोबल वार्मिग से हिम पर्वत पिघल रहे हैं जो कि समुद्र के जल स्तर को बढ़ा रहे हैं फलस्वरूप समुद्र के आस-पास के शहर, कस्बे डूबने के कगार पर हैं या बाढ़ और सुनामी जैसी आपदा का कारण बन रहे हैं।

ये कारण प्राकृतिक कम और मानवजनित ज्यादा है।

शहरीकरण: अत्यधिक बाढ़ का आना शहरों का डूब जाना आजकल एक आम दृश्य सा बन गया है। अभी हाल ही में हल्की सी बारिश हुयी और पूरा दिल्ली शहर डूबने के कगार पर खडा था। इसका कारण मानवजनित अवैज्ञानिक तरीके से की गयी शहरीकरण और इसकी संरचना है। सीमेन्ट से निर्मित सड़कें, बिल्डिंग और अन्य निर्माण बारिश होने की दशा में पानी को सोख नहीं पाते और सीधे नदियों, झीलों, तालाबों में जाते हैं और बाढ़ का कारण बनते है। जलवायु परिवर्तन के कारण कम वृष्टि, अति वृष्टि ने भी हालात को खराब किया है। सूखा पड़ना, अत्यधिक गर्मी, अत्यधिक सर्दी मे सब कारण जलवायु परिवर्तन के कारण ही देखे जा रहे हैं। जिसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मानव का ही हाथ रहा है। अन्धाधुन्ध विकास, शहरीकरण ने इसको और भी विकराल रूप दे दिया है।

उपसंहार एवं निष्कर्ष: कोई भी प्राकृतिक आपदा मानव रोक सकता है। बिना मानव हस्तक्षेप (प्रत्यक्ष या परोक्ष) के प्राकृतिक घटना आपदा में परिवर्तित नही हो सकती। मानव को चाहिए कि विकास के साथ-साथ हमें प्रकृति के साथ भी सामन्जस्य बना के चले और प्रकृति का दोहन ना करें। प्रकृति और विकास जब परस्पर चलेंगे तो आपदा इतनी विकराल रूप नही लेगी।

इस सन्दर्भ में गॉधी जी का एक वक्तव्य बड़ा ही प्रासंगिक है, "प्रकृति हर इन्सान की जरूरत को पूर्ण कर सकती है परन्तु इन्सान के लालच को कदापि नही।"

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), गुरुग्राम की दिनांक 19.07.2023 को बैठक का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुरुग्राम की वर्ष 2023-24 की प्रथम छमाही बैठक श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वाणिज्य व मानव संसाधन विकास) एवं अध्यक्ष, विराकास, वाप्कोस की अध्यक्षता में दिनांक 19.07.2023 को दोपहर 3.00 बजे गुरुग्राम कार्यालय के समिति कक्ष में आयोजित की गई।

बैठक में नराकास, गुरुग्राम के सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख या उनके प्रतिनिधि तथा उनके साथ हिन्दी अधिकारी भी उपस्थित थे। बैठक में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) के सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा भी उपस्थित थे।

सबसे पहले श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (मा.सं. व रा.भा.का.) तथा सदस्य सचिव, नराकास, गुरुग्राम द्वारा बैठक में उपस्थित अध्यक्ष महोदय तथा सभी कार्यालय प्रमुखों/प्रतिनिधियों व राजभाषा अधिकारियों तथा सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) का हार्दिक स्वागत किया गया।

तत्पश्चात सदस्य सचिव के अनुरोध पर श्री अनुपम मिश्रा, अध्यक्ष तथा गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा का बैठक में उपस्थित उच्चाधिकारियों से पुष्पगुच्छ देकर हार्दिक स्वागत करवाया गया। अध्यक्ष महोदय की अनुमति से सदस्य सचिव, नराकास, गुरुग्राम द्वारा बैठक की विभिन्न मदों पर विधिवत् रूप से चर्चा की गई।

बैठक में अध्यक्षीय कार्यालय वाप्कोस लिमिटेड द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा हिंदी में किये जा रहे कार्यों की पीपीटी बनाकर दिखाई गई।

"पुस्तकें हमारी मित्र हैं जो, मार्ग दिखाती हैं दूरगामी पथ पर।
छायादार तिमिर में होकर, ले जाती हैं पर्वतों की चोटी पर ॥"

यदि आशाएँ शांत हो गई हैं, और आगे कुछ नहीं देख पाते,
आपकी आकांक्षाओं की आग, बुझ गई है, तो सच मानिए,
आप वृद्ध हो गए हैं ।"

सोशल मीडिया में जलवा बिखेरती हिन्दी

साभार : राजभाषा भारती

हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो कि इन दिनों सोशल मीडिया, पत्रिकाओं और दैनिक पत्रों सहित सभी प्रचार माध्यमों पर अपना जलवा बिखेर रही है। आज के वर्तमान और आधुनिक युग में सोशल मीडिया हर किसी के जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। हर साल 30 जून को विश्व सोशल मीडिया दिवस के रूप में मनाया जाता है। विश्व सोशल दिवस का मुख्य उद्देश्य यह है कि विश्व में सोशल मीडिया संचार के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में कैसे उभरा इसके बारे में सभी को बताया जा सके।

आज के समय में सोशल मीडिया दुनिया के कोने-कोने से लोगों को आपस में जोडने का अहम साधन बन कर उभरा है। इसके अलावा सोशल मीडिया प्रमुख प्रभावशाली लोगों को अपना ब्रांड बढ़ाने में मदद करता है। वहीं महत्वपूर्ण समाचार और घटनाओं को सबसे तेजी से सोशल मीडिया पर शेयर किया जा रहा है। आज के समय में सोशल मीडिया एक गेम चेंजर बन गया है। वहीं करोना काल में महामारी के बीच हताश लोगों के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हेल्पलाइन के रूप में बदल गया है।

सोशल मीडिया की ताकत पहली बार दिल्ली के रामलीला मैदान में वर्ष 2011 के अन्ना आन्दोलन में दिखी। वहीं दूसरी बार यह ताकत दिल्ली में ही किसान आन्दोलन में दिखी जिसकी पूरी लडा़ई दुनिया की पहली ऐसी लडा़ई बन गई जो जमीन पर होकर सोशल मीडिया की आभासी दुनिया में लड़ी गई। सोशल मीडिया के जरिए दोनों पक्षों से शब्दभेदी बाण चलाए गए। लगभग 378 दिनों तक चली इस वर्चुअल लडाई में विदेशी हस्तियों ने भी खूब भागीदारी की और खबरें ट्विटर और फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब के पत्रकारों के माध्यम से मेनस्ट्रीम मीडिया को धता बताकर जन जन तक पहुंचती रही। किसान आंदोलन को लेकर पॉप सिंगर रिहाना और पर्यावरण एक्टिविस्ट ग्रटा थनबर्ग ने ट्वीट किए थे जिसके बाद अब असल मुद्दे को छोड़कर इस बात पर चर्चा होने लगी कि देश के आंतरिक मामलों में अंतर्राष्ट्रीय हस्तियां क्यों बोल रही हैं।

भारत के प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी इस समय सोशल मीडिया पर सबसे लोकप्रिय नेता हैं। वे अगस्त 2022 से अक्टूबर 2022 के बीच ट्विटर, यूट्यूब और गूगल सर्च सबके ट्रेंडिग चार्ट पर टॉप पर रहे हैं। प्रधान मंत्री के अलावा आज लगभग बहुत सारे नेता और अभिनेता, सामाजिक हस्तियां, उद्योगपति, युवा प्रोफेशनल, पत्रकार कौन ऐसा नहीं है जो सोशल मीडिया पर न हो और कई बार तो ट्विटर जैसे माध्यमों पर लोग नेताओं को उल्टा सीधा लिखने वालों को खूब ट्रोल कर देते हैं।

अब तो आलम यह है कि घटना और उसकी सूचना एक ही समय में देखे जा सकते हैं। इतना ही नहीं, मोबाइल नेटवर्क के कमाल ने सूचना और उसकी साझेदारी की तकनीकों ने धमाल मचा रखा है। सोशल मीडिया के माध्यम से अब हम उन सूचनाओं तक भी आसानी से पहुंच सकते हैं, जो देर से प्राप्त होती थीं या कई बार ओझल ही रह जाती थी।

आखिर सोशल मीडिया है क्या? यूं तो सोशल मीडिया की अभी तक कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं गढ़ी जा सकी है, लेकिन यदि सामान्य समझ के हिसाब से और सामान्य शैली में कहा जाए, तो सोशल मीडिया शब्द एक छाते के समान हैं, जिसके अंतर्गत लोगों के बीच सामाजिक संवाद या मेलजोल बढ़ाने के उद्देश्य से काम करने वाली इंटरनेट आधारित साइट्स और सेवाएं शामिल हैं। सोशल मीडिया लोगों के अंतरवैयक्तिक संवाद का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

सोशल मीडिया के वर्तमान स्वरूप का विकास बुलेटिन बोर्ड सिस्टम (बीबीएस), यूजनेट और इन्टरनेट रिले वार्तालाप के रूप में अस्सी के दशक से शुरू हुआ। ठीक है कि इन्हें सोशल मीडिया के रूप में उद्धत नहीं किया जाता, लेकिन इतना तो कहा ही जा सकता है कि वर्तमान सोशल मीडिया के वही जनक हैं। आज जिसे विशिष्ट रूप से सोशल मीडिया कहा जाता है, वह नब्बे के दशक में अस्तित्व में आए उपकरणों की श्रृंखला से संबंधित है। वर्ष 1995 में प्रकट होने वाले ऐसे साइट्स में ई-बे का नाम शामिल है। इसी तरह 1997 में वेब लॉग सामने आया, जिसका नामकरण जॉर्न बर्गर ने किया। बाद में पीटर महोंल्ज ने छोटा करके इसे ब्लॉग कर दिया। बहरहाल, जिन सेवा संस्थाओं ने इन नामों का इस्तेमाल किया, वे लाइव जॉर्नल और ब्लॉगर डॉट कॉम के आने के साथ ही सामने आए। इसके बाद 2003 में इन्टरनेट की दुनिया में स्काइप और वर्ल्ड प्रेस ने कदम रखा। साल भर बाद ही यानी 2004 में फेसबुक का प्रारंभ हुआ, जबकि 2005 में यूट्यूब और 2006 में ट्विटर की शुरूआत हुई। सोशल मीडिया के तमाम साइट्स में से आज फेसबुक और ट्विटर का सबसे ज्यादा इस्तेमाल होता है। इन माध्यमों का इतनी जल्दी लोकप्रिय होने का सबसे बड़ा कारण यह था कि इनमें शब्दों के साथ-साथ श्रव्य-दृश्य (Audio-visual) भी संभव था। उपयोगकर्ताओं की रूचि के तमाम अवयव इनमें अंतर्निहित हैं। अब उपयोगकर्ता न केवल दूसरे का वीडियो देख सकते थे, बल्कि स्वयं उसका निर्माण करने के साथ ही उसे बड़ी आसानी से शेयर भी कर सकते थे। सोशल मीडिया के इन स्वरूपों के अस्तित्व में आने के बाद उपयोगकर्ताओं के लिए मेलजोल और संवाद का एक ऐसा वितान खुल गया, जहां दूरी सिमट कर मोबाइल के ऐप में समा गयी। दूरस्थ स्थानों पर रहने वाले परिजनों और दोस्तों से रोज-रोज मिलना संभव हो गया। अब हर उपयोगकर्ता अपने रोज-रोज की गतिविधियों से हर किसी को अवगत करा सकता था। फेसबुक और व्हाटसऐप पर संवाद को चमत्कारिक ढ़ंग से आसान बना दिया। अब सोशल मीडिया टेक्स्ट से निकल कर ऑडिया-विजुअल की दुनिया में पहुंचकर और भी रोचक हो गया।

यूं तो सोशल मीडिया में सबसे ज्यादा अंग्रेजी का ही इस्तेमाल होता है, लेकिन फ्रेंच, जर्मन और स्पेनिश जैसी अन्य भाषाओं की भी सोशल मीडिया पर शानदान उपस्थिति है। जहां तक हिन्दी की बात है, तो वह निश्चित रूप से भारत के सोशल मीडिया में अग्रणी स्थान रखती है। अगर कहा जाए तो हिन्दी भारतीय सोशल मीडिया की रानी है, तो शायद गलत नहीं होगा। ऐसा तब है, जब हिन्दी क्षेत्रों की जनता की इंटरनेट तक अपेक्षित पहुंच नहीं है। सोशल नेटवर्किंग साइट ने हिन्दी पोर्टल की शुरूआत 2009 में की। इससे पहले 2007 में गूगल ने हिन्दी ट्रांसलेटर जारी किया था। ऐसा नहीं है कि उससे पहले हिन्दी में ट्वीट नहीं किया जा सकता था, लेकिन तब वह जरा कठिन था, क्योंकि उसके लिए गूगल के ट्रांसलिटरेटिंग टूल की मदद से हिन्दी फॉन्ट में बदलने के बाद उसे ट्विटर पर चिपकाना पड़ता था। इसमें समय तो ज्यादा लगता ही था, उपयोगकर्ता के लिए अंग्रेजी जानना भी जरूरी था।

सोशल मीडिया में हिन्दी फॉन्टस् और ऐप्स की उपस्थिति ने हिन्दी को पंख लगा दिए। स्थिति यह है कि अंग्रेजी जानने वाले लोग भी आज हिन्दी में ही लिखना पसंद करते हैं। सोशल मीडिया पर हिन्दी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं की उपस्थिति भी बढ़ रही है। सच तो यह है कि स्थानीय भाषा ही भारतीयों की पहली पसंद है। सोशलबैकर्स नामक शोध संस्थान के एक अध्ययन की रिपोर्ट बताती है कि फेसबुक उपयोगकर्ता के लिहाज से अमेरिका और इंडोनेशिया के बाद तीसरा स्थान भारत का है। फेसबुक के अलावा भारतीय ट्विटर, इन्स्टाग्राम, व्हाटसऐप आदि जैसे अन्य सोशल साइट्स का इस्तेमाल भी खूब करते हैं और उनमें लगातार इफाजा भी हो रहा है। शहरों की कौन कहे, अब तो ग्रामीण इलाकों में भी सोशल मीडिया की लोकप्रियता का ग्राफ चढ़ने लगा है। सोशल मीडिया में अपनी उपस्थिति से अब वे शहरी उपयोगकर्ता से स्पर्धा कर रहे हैं और कई बार तो उनसे आगे भी निकल जाते हैं।

सोशल मीडिया पर सक्रिय हुए हिन्दी क्षेत्र के इन नए लोगों (युवा-युवतियों की संख्या ज्यादा है) की संवाद की भाषा अंग्रेजी नहीं, बल्कि हिन्दी और उसकी बोलियां हैं। हिन्दी के बढ़ते इस्तेमाल का अंदाजा इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि अब महाराष्ट्र और गुजरात जैसे अहिन्दी प्रदेशों के लोग भी अंग्रेजी नहीं, हिन्दी को प्राथमिकता देते हैं। पूर्वोत्तर और दक्षिण के राज्यों के लोग भी अपनी भाषा में चैटिंग करते हैं। लेकिन जहां तक सोशल मीडिया की बात है, तो हिन्दी के आगे भारत की अन्य भाषाएं काफी पीछे हैं। लेकिन इसके साथ यह भी सच है कि सोशल मीडिया में हिन्दी का प्रयोग करने वाले उपयोगकर्ताओं की संख्या भले ही ज्यादा हो लेकिन आबादी के अनुपात में वह तमिल से पीछे है। जहां, 42 प्रतिशत तमिल अपनी भाषा का इस्तेमाल करते हैं, वहीं हिन्दी के केवल 39 प्रतिशत, कन्नड के 37 प्रतिशत, मराठी व बंगाली के 34 प्रतिशत, तेलगू के 31 प्रतिशत, गुजराती और मलयालय के 28 प्रतिशत लोग अपनी भाषा में संवाद करते हैं।

जिस तरह टेलीविजन घर का एक अपरिहार्य हिस्सा हो गया है, उसी तरह अब इन्टरनेट उसका स्थान ले रहा है और उसका विकल्प बनने की राह पर तेजी से अग्रसर है। आज कम्प्यूटर के अनेक विशेषज्ञ, उद्यमी और स्वसंसेवी संस्थाओं ने दूरदराज के गांवों में साइबर कैफे खोल रखे हैं और खोल रहे हैं। ये साइबर कैफे ग्रामीण जनसंख्या को कम्प्यूटर से परिचित होने से लेकर उसमें सिद्धहस्त होने तक का प्रशिक्षण देने का काम कर रहे हैं। स्थानीय युवक-युवतियों को तकनीकी हुनर विकसित करने में उपयोगकर्ताओं की इस बढ़ती संख्या ने गूगल, फेसबुक, ट्विटर आदि के लिए एक बड़ा बाजार भी मुहैया करा रहा है। ऐसे में उनके लिए हिन्दी को अनदेखा करना संभव नहीं रह गया है। अकारण नहीं कि ये सभी उपक्रम हिन्दी में सेवा प्रदान कर रहे हैं। ग्रामीण इलाकों के साइबर कैफे एक तरह से प्रशिक्षण केन्द्र का काम करते हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि आज भी हमारे देश की संपर्क भाषा अंग्रेजी ही है। अमेरिका के बाद भारत ही वह दूसरा देश हैं, जहां अंग्रेजी जानने वालों की संख्या सबसे ज्यादा है। भारत में अंग्रेजी जानने वालों की संख्या 12.5 करोड़ है। लेकिन यदि सभी भारतीय भाषाओं की इंटरनेट पर बढ़ती उपस्थिति पर नजर डालें तो साफ दिखाई देता है कि वे अंग्रेजी में सेंध लगाने लगे हैं। हाल ही में मैनेजमैंट कन्सल्टेंसी एमपीएमजी इंडिया तथा गूगल द्वारा सम्मिलित रूप से किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि लगभग 70 प्रतिशत भारतीय डिजिटल कन्टेंट के मामले में अंग्रेजी के बनिस्पत स्थानीय भाषा के कन्टेंट पर ज्यादा विश्वास करते हैं।

आज हिन्दी में ब्लॉग लिखना सबसे लोकप्रिय विद्या बन गया है। भारत के हिन्दी प्रदेशों के अलावा गुजरात और महाराष्ट्र समेत विदेशों मे रह रहे भारतीय लोग भी हिन्दी में ब्लॉग लिख रहे हैं। एक आकलन के अनुसार इस समय हिन्दी में लगभग चार लाख ब्लॉग्स् हैं, जिनमें लाख तो नियमति रूप से सूचना देने का काम कर रहे हैं। लेकिन इतनी संख्या होने के बावजूद हिन्दी ब्लॉग्स की विषय-वस्तु में वह विविधता दिखाई नहीं देती, जो अंग्रेजी व अन्य भाषाओं में दिखाई देती है। आधे से ज्यादा हिन्दी ब्लाग्स साहित्य, संस्कृति और धर्म से संबंधित हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है अधिकांश हिन्दी भाषी पारंपरिक चीजों को पसंद करते हैं। कहने का अर्थ यह कि इन विषयों के पाठक आसानी से मिल जाते हैं। अन्य विषय मसलन विज्ञान, समाज शास्त्र, राजनीतिक शास्त्र, भूगोल, मानव शास्त्र और यहां तक कि दर्शन शास्त्र से संबंधित ब्लॉग्स अपवाद स्वरूप ही दिखाई देते हैं। हिन्दी उपयोगकर्ताओं को उपरोक्त विषयों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए बहुधा अंग्रेजी पर ही निर्भर रहना होता है। केवल बलॉग्स ही नहीं, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाटसेप आदि पर भर बहुधा ऐसे ही विषयों पर सामग्री देखने को मिलती है।

सोशल मीडिया पर हिन्दी के साथ एक और भी दिक्कत दिखाई देती है। बहुधा वह प्रतिगामी सोच का प्रतिनिधित्व करते नजर आती है। प्रगतिशीलता उसे ज्यादा नहीं भाती। हिन्दी उपयोगकर्ताओं की टिप्पणियों में यह प्रवृति स्पष्ट देखी जा सकती है कि वे धार्मिक और सामाजिक परंपराओं और यहां तक कि रूढियों तक का समर्थन करते हैं। ऐसा नहीं कहा जा सकता है कि यह प्रवृति अन्य भाषा के उपयोगकर्ताओं में नहीं है, लेकिन हिन्दी भाषियों में यह ज्यादा मुखरित है। इसके अलावा धर्मनिरपेक्षता का उनका आग्रह भी कमजोर नजर आता है। अन्यथा नहीं कि कई बार वे सांप्रदायिकता को हवा देते महसूस होते हैं। देवी-देवता, भूत-प्रेत, हवन-पूजन और कर्मकाण्ड से उनका अभी विलगाव नहीं हुआ है। इसके विपरित भारत कह अन्य स्थानीय भाषाओं जैसे तमिल, तेलुगू, मलयालम या मराठी में रूढियों की पत्तन गाथा की इबारत देखने को मिलती है।

भारत में सोशल मीडिया के जितने उपयोगकर्ता हैं, उनमें सबसे ज्यादा संख्या उनकी है, जो हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी संवाद करते हैं या करने की क्षमता रखते हैं। केपीएमजी की रिपोर्ट का आकलन है कि कुछ सालों में हिन्दी उपयोगकर्ताओं की संख्या 20 करोड़ से भी ज्यादा हो जाएगी यानी उनकी कुल संख्या कुल भारतीय उपयोगकर्ताओं का 38 प्रतिशत हो जाएगी, जबकि मराठी, बंगाली और तमिल उपयोगकर्ताओं की आबादी क्रमश: 9, 8 और 6 प्रतिशत हो जाएगी। यही कारण है कि आज ऑनलाइन सूचनाओं के लिए हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में ऐप्स और साइटस् में वृद्धि होती जा रही है। चूंकि भारतीय भाषाओं में सबसे ज्यादा उपयोकर्ता हिन्दी के हैं, इसलिए ब्लॉगरों की संख्या भी सबसे ज्यादा हिन्दी में ही है। लोकप्रिय हिन्दी ब्लॉग पोर्टल 'इन्डिब्लॉगर' पर जहां वर्ष 2010 तक केवल 350 हिन्दी ब्लॉग हुआ करते थे, अब वहां 1300 हिन्दी ब्लॉग उपस्थित हैं। यहां उल्लेखनीय बात यह भी है कि अधिकांश ब्लॉगर्स छोटे शहरों और कस्बों से संबंधित हैं। हिन्दी सर्च इंजिन ऐसे लोगों के लिए किसी वरदान से कम नहीं। हिन्दी की अहमियत इसी बात से समझी जा सकती है कि अमिताभ बच्चन जैसी फिल्मी हस्तियां भी बहुधा हिन्दी में ही ट्वीट करती हैं। अगर यह ट्रेंड आगे भी जारी रहता है, तो कहने की आवश्यकता नहीं कि हिन्दी सबसे ज्यादा ट्वीट होने वाली भाषा के रूप में स्थापित हो जाएगी।

सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति को आसान और प्रभावी दोनों बना दिया है। इसमें ऐप्स से ज्यादा उपयोगकर्ताओं की सृजनशीलता है। इस सृजनशीलता ने सोशल मीडिया में एक विशेष प्रकार की भाषा की रचना ही कर डाली है। मुख्य रूप से इसके दो प्रकार हैं – परिवर्णी शब्द (Acronym) (कई शब्दों को इस्तेमाल करने के बदले उन शब्दों के शुरू और अंत के अक्षरों से एक नए शब्द की रचना करना) और मीम (Meme)। कहा जाए तो ये दो विद्याए सोशल मीडिया की जान हैं। परिवर्णी शब्दों का इस्तेमाल इसलिए शुरू हुआ कि लिखकर बात करने में समय अधिक लगता है। उदाहरण के लिए आज कल LOL शब्द खूब चल रहा है, जिसका पूर्ण स्वरूप लाफ आउट लाउड। यदि किसी व्यक्ति को किसी को पोस्ट विचित्र या हास्यपूर्ण लगता है, तो वह यह कहने के बदले कि उसे बहुत हंसी आयी, केवल LOL लिख देता है। पोस्ट लिखने वाला भी जवाबी पोस्ट डालने वाले की बात आसानी से समझ जाता है। दुनिया की कई अन्य भाषाओं ने भी 'लोल' के लिए शब्द विकसित कर लिए हैं।

उदाहरण के लिए रूसी भाषा में LOL के लिए XAXA स्पेनिश भाषा में JAJAJA और जापानी में एक w या दो ww लिखते हैं। कई अन्य भाषाभाषी तो LOL के लिए केवल अंकों का इस्तेमाल करने लगे हैं, जैसे थाईलैंड में 555 लिखते हैं। हिन्दी भाषा में अभी तक ऐसा नहीं हो पाया है। जाहिर है कि इसके कारण भी होंगे। प्रत्यक्ष रूप से इसके दो कारण नजर आते है। पहला तो यह कि किसी भाषा में ऑनलाइन विषय-वस्तु के निर्माण और उसे प्रोत्साहित करने के लिए संपर्क भाषा (Lingua Franca) का होना जरूरी है। अंग्रेजी के अलावा चीन, रूस और थाईलैंड के पास ऐसी भाषा है, इसलिए वे एक्रोनिम का विकास करने में सक्षम हुए हैं। दूसरा कारक है उस देश के लोगों की इंटरनेट साक्षरता। जहां तक हिन्दी की बात है, तो ये दोनों ही कारक उसके दामन से दूर हैं।

सोशल मीडिया में आज कल मीम का जलवा है। यदि कहा जाए कि सोशल मीडिया पर आज सबसे ज्यादा लोकप्रिय और प्रभावी क्या है, तो इसका उत्तर निश्चित ही मीम होगा। मीम क्या है? मीम ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार मीम का मतलब संस्कृति के एक तत्व या व्यवहार का एक सिस्टम है, जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के पास नकल के जरिए पहुंचता है। यह एक छवि, वीडियो, लेख का टुकडा़ आदि होता है और जो विशिष्ट रुप से हास्यजनक होता है। मीम बनाने वाले और साझा करने वाले इसे बड़ी तेजी से लोकप्रिय बना देते हैं। दिलचस्प है कि साझा करने वाला हर अगला व्यक्ति उसमें कुछ जोड देता है, जिसके चलते उसकी ताजगी बनी रहती है। मीम की रचना में फोटो, वीडियो या शब्द वास्तविक होते हैं, लेकिन सोशल मीडिया पर उसे मजाक या व्यंग्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। मीम के मामले में स्थानीय भाषाएं ज्यादा लोकप्रिय और असरकारी हैं। सोशल मीडिया पर प्रचलित मीम्स को देखकर भी इसकी लोकप्रियता और असर का अंदाजा लगाया जा सकता है। सोशल मीडिया में व्यंग्य और हास्य का सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली टूल है। यह एक ऐसी कला है, जो सबको आइना दिखाती है।

चूंकि सोशल मीडिया की रचना और उसके इस्तेमाल के साथ-साथ उसे समझना भी आसान होता है। सच तो यह है कि आज हिन्दी मीम्स भारत के सांस्कृतिक दस्तावेजीकरण का सबसे बड़ा वाहक बन गया है।

यह सच है कि हिंदी अब भी भारत की संपर्क भाषा नहीं बन सकी है। ज्यादा से ज्यादा हिन्दी उत्तर और मध्य भारत की संपर्क भाषा है। अन्य राज्य के लोगों से संवाद का माध्यम अंग्रेजी ही है, क्योंकि हर राज्य की अपनी-अपनी भाषा है। इंटरनेट की बात कौन करे, आज भी हिन्दी प्रदेश के अधिकांश लोगों की पहुंच कम्प्यूटर तक नहीं है। इसके बावजूद पिछले कुछ बरसों से मोबाइल पर इंटरनेट का उपयोग खूब तेजी से बढ़ा है। अब तो घटना की खबर सबसे पहले सोशल मीडिया पर आती है। हिन्दी की खनक हमेशा बनी रहेगी, क्योंकि पूरे देश ही क्या वैश्विक स्तर पर एक बहुत बड़ी आबादी यह भाषा बोलती है, पढ़ती-लिखती है और उससे भी ज्यादा बड़ी आबादी हिन्दी समझती है। बहरहाल, हिन्दी मीडिया, मनोरंजन और जनसंचार के सभी माध्यमों के जरिए बहुत तेजी से आगे बढ़ती ही जा रही है। वर्तमान ही भविष्य तैयार करता है, तो इस मायने में हम आशावान हो सकते हैं कि हिन्दी का भविष्य बहुत ही उज्वल है, क्योंकि इसका वर्तमान चमक रहा है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुरुग्राम के तत्वावधान में वाप्कोस लिमिटेड द्वारा हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 28.06.2023

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुरुग्राम के तत्वावधान में वाप्कोस द्वारा दिनांक 28.06.2023 को "हिंदी निबंध प्रतियोगिता – नदियों में बढ़ता प्रदूषण" का आयोजन किया गया जिसमें नराकास, गुरुग्राम के विभिन्न सदस्य कार्यालयों से 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया। श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (मा.सं. व रा.भा.का.) एवं सदस्य सचिव नराकास, गुरुग्राम ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन भी किया।

हिन्दी का मान करें हम हिन्दी का सम्मान करें
हर दिन होगा "हिन्दी दिवस" गर राजभाषा में हम काम करें

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा किए गए राजभाषाई निरीक्षण

लखनऊ कार्यालय

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 23.06.2023 को वाप्कोस के लखनऊ कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण कार्यक्रम में वाप्कोस लखनऊ कार्यालय व मुख्यालय से निम्नलिखित अधिकारी समिति के समक्ष उपस्थित थे :-

- श्री विनीत चौधरी, परियोजना प्रबन्धक, लखनऊ
- श्री अनुपम मिश्रा, निदशेक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास
- श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (मा.सं. व रा.भा.का.)
- श्री दलीप कुमार सेठी, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.)

पटना कार्यालय

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 10.05.2023 को वाप्कोस के पटना कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण कार्यक्रम में वाप्कोस पटना कार्यालय व मुख्यालय से निम्नलिखित अधिकारी समिति के समक्ष उपस्थित थे :-

- ❖ श्री राजेश गेहानी, परियोजना प्रबन्धक, पटना कार्यालय
- ❖ श्री संजय शर्मा, वरि.महा प्रबन्धक, पटना कार्यालय
- ❖ श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (मा.सं. व रा.भा.का.)

पंचकुला कार्यालय

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 13.05.2023 को वाप्कोस के पंचकुला कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण अमृतसर में किया गया। इस निरीक्षण कार्यक्रम में वाप्कोस पंचकुला कार्यालय व मुख्यालय से निम्नलिखित अधिकारी समिति के समक्ष उपस्थित थे:-

- ❖ डॉ. एस.के.त्यागी, परियोजना निदेशक, पंचकुला कार्यालय
- ❖ श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (मा.सं. व रा.भा.का.)
- ❖ श्री दलीप कुमार सेठी, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.)

देहरादून कार्यालय

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 24.05.2023 को वाप्कोस के देहरादून कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण कार्यक्रम में वाप्कोस देहरादून कार्यालय व मुख्यालय से निम्नलिखित अधिकारी समिति के समक्ष उपस्थित थे :-

- ❖ श्री कौशिक दास, मुख्य अभियंता, देहरादून कार्यालय
- ❖ श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (मा.सं. व रा.भा.का.)
- ❖ श्री दलीप कुमार सेठी, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.)
- ❖ श्री चिराग अग्रवाल, प्रबन्धक, देहरादून कार्यालय

प्रथम मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी

साभार : भारत की प्रथम महिला

सामाजिक वास्तविकता को आज भी सही रूप में नही, पक्षपात की दृष्टि से देखा जा रहा है; पर आज का स्वीकृत ध्येयवाद परिवर्तन की माँग कर रहा है। भारतीय स्त्री में निहित सहनशीलता और सहानुभूति की शक्ति के बल पर वह सामाजिक क्रांति की अग्रणी बन सकती है। अत: स्त्री के नवीन नेतृत्व को, उसके भविष्य को आशामय रूप में देखकर सामाजिक प्रतिगामी शक्तियों से हमें अर्थपूर्ण चर्चा कर लेनी है। ये विचार थे श्रीमती सुचेता कृपलानी के, जो सामाजिक और राजनीतिक दोनों क्षेत्रों में सफल नेतृत्व की क्षमता रखती थीं।

भारतीय राज्यों में उत्तर प्रदेश ने विजयलक्ष्मी पंडित को प्रथम कांग्रेस मंत्रिमंडल में मंत्री पद देकर और सरोजिनी नायडू को राज्यपाल बनाकर इस दिशा में पहल कर ही ली थी। श्रीमती सुचेता कृपलानी भी इसी राज्य की मुख्यमंत्री बनकर भारत की 'पहली महिला मुख्यमंत्री' कहलाईं। उत्तर प्रदेश का यह गौरव समस्त भारतीय महिलाओं का गौरव रहा।

सुचेता जी को एक ऐसी महत्वाकांक्षिणी महिला माना जाता था, जिनकी आकांक्षाएँ देश की ओर अभिमुख थीं और उसकी उन्नति के साथ जुड़ी थीं। सामाजिक व रचनात्मक क्षेत्रों में काम करती हुई एक-एक पग वे आगे बढ़ती गईं। महिलाएं, शरणार्थी, श्रम-संगठन, सेवा समितियाँ, कांग्रेस संगठन, विदेशों में भारतीय प्रतिनिधित्व, रचनात्मक कार्यक्षेत्र और राजनीतिक दाँव-पेंच-सभी उनकी रूचि के विषय रहे। वे जन्म से बंगाली थीं। उनकी शिक्षा हुई लाहौर और दिल्ली में तथा वे मुख्यमंत्री बनी उत्तर प्रदेश की। जब गुप्त मंत्रिमंडल में उन्हें श्रम मंत्री का पद दिया गया तो कइयों को यह अच्छा नहीं लगा, क्योंकि उत्तर प्रदेश से उनका कोई सीधा संबंध पहले नहीं रहा था। यद्यपि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में वे नौकरी कर चुकी थीं। यो वे सन् 1948-50 में दो वर्ष तक उत्तर प्रदेश विधानसभा की सदस्या भी रही थीं, पर इस अवधि में कांग्रेस दल की और संविधान सभा की सदस्या के नाते वे उसी कार्य में अधिक व्यस्त रही थीं

श्रम मंत्री बनने के तीन वर्ष बाद 2 सितंबर, 1963 को उन्हें विधानसभा का नेता चुन लिया गया और 2 अक्तूबर को वे मुख्यमंत्री बन गईं। यह एक ऐसा काँटों का ताज था, जिसे पहनने में गरिमा भी थी, चुभन भी। प्रदेश की गुटबंदी, दलबंदी, सत्ता-लिप्सा और षड्यंत्रों भरी राजनीति उन्हें विरासत में मिली थी। एक तो उत्तर प्रदेश जैसा विस्तृत और बिछड़ा हुआ राज्य, जो पूरे देश के 17 प्रतिशत और देश की पिछड़ी जनता के 35 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है तथा जिसकी 87 प्रतिशत जनता गाँव में बसती है, दूसरे विरासत मे मिली बाधाओं-कठिनाइयों से अँटा वातावरण, श्रीमती कृपलानी के लिए यह एक बड़ी चुनौती थी। पर उन्होंने चुनौती को स्वीकार ही नहीं किया, मंत्रिमंडल बनाते समय दृढ़ता का परिचय भी दिया। एक ओर आंतरिक दलबंदी, दूसरी ओर असंतुष्ट वर्ग को मंत्रिमंडल में शामिल करने के हाई कमांड के आदेश-बड़ी कठिन स्थिति थी। मंत्रिमंडल गठन के प्रश्न पर तथा कुछ सभा सचिवों की नियुक्ति को लेकर उन्हें दो बार हाई कमांड से उलझना पड़ा। विधानसभा में विरोधी दलों द्वारा सरकार की आलोचना के समय मंत्रिमंडल के अपने सहयोगियों के उदासीन रवैए के कारण कई बार निराश भी होना पड़ा, पर श्रीमती कृपलानी कभी विचलित नहीं हुईं। वे जानती थीं कि दलगत राजनीति में कभी भी शतरंज के मोहरे पर उनके नेतृत्व की बलि दी जा सकती है, पर जब तक (अक्तूबर 1963 से मार्च 1967 तक) मुख्यमंत्री रहीं, उन्होंने सभी विरोधों-बाधाओं का डटकर मुकाबला किया।

एक बार जब मैंने उनसे पूछा कि महिला मुख्यमंत्री के नाते पुरूष सहयोगियों से ही नहीं, उनके परंपरागत संस्कारों-मनोविज्ञान से भी निबटने के उनके अनुभव क्या हैं तो उत्तर में उन्होंने बड़े मार्मिक और अर्थपूर्ण ढंग से कहा, ''आपका प्रश्न सार्थक है। पुरूष मन से नारी की श्रेष्ठता या सत्ता को कभी स्वीकार नहीं करता। प्रारंभ में वह इस भ्रम का भी शिकार होता है कि अब कुछ मनमानी करने की छूट है और हस्तक्षेप की संभावना कम है। फिर भी, जैसे ही नेत्री या प्रशासक नारी अपनी बुद्धिमत्ता, सूझ-बूझ, सूक्ष्म दृष्टि और दृढ़ता का परिचय देती है, उसके भ्रम का निवारण हो जाता है। लेकिन भ्रम-निवारण के बाद भी कुंठाएं तो रहती ही हैं, जिनसे निबटना होता है। मुझे इसका खासा अनुभव है।"

सुचेता कृपलानी का जन्म जून 1908 में अंबाला में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा लाहौर में हुई, फिर एम.ए. दिल्ली विश्वविद्यालय से किया। राष्ट्रीयता और खादी के पारिवारिक परिवेश में पलकर स्वाधीन भारत के सपने वे बचपन में ही देखने लगी थीं। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका के रूप में काम करते हुए भी उनकी भावनाएं देश-सेवा के लिए उद्वेलित हो रही थीं। फिर सन् 1932 से सार्वजनिक क्षेत्र में और सन् 1939 से राजनीति में कूद पड़ी। बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत कार्य, फिर विभाजन के बाद शरणार्थी पुनर्वास, महिला संस्थाएं, कांग्रेस संगठन, श्रमिक संघ सभी उनके कार्य क्षेत्र बनते गए। सन् 1939 तक उन्होंने सामने न आकर गुप्त रूप से कार्य किया, फिर कांग्रेस में शामिल हो स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने लगीं। सन् 1940 व 1944 में दो बार जेल भी गईं। सन् 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' के समय अग्रणी युवा उत्साही कार्यकर्ताओं में उनका नाम लिया जाता था। कुछ समय भूमिगत रहकर उन्होंने कांग्रेस सेवा दल और महिला कार्यकर्ता टोलियों के प्रशिक्षण का भार सँभाला, फिर गिरफ्तार कर जेल भेज दी गईं। जेल से छूटने के बाद तो वे कभी जनता की ऑंखों से ओझल हुई ही नहीं।

सन् 1941-42 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महिला विभाग में, विदेश विभाग में, मंत्री पद पर,1945 कस्तूरबा ट्रस्ट के संगठन मंत्री पद पर उनकी नियुक्ति हुई। सन् 1949 में संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा अधिवेशन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल की सदस्या थीं तो 1954 में टर्की भेजे गए संसदीय प्रतिनिधिमंडल की तथा 1961 में अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल की नेत्री। इसी तरह सन् 1956 में राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित 'एशियाई महिलाओं की नागरिक जिम्मेदारियां सम्मेलन में भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व भी उन्होंने ही किया था, क्योंकि तब तक महिलाओं के रचनात्मक क्षेत्र में वे काफी काम कर चुकी थीं। सन् 1946 में केंद्रीय संविधान सभा की सदस्या रहने के बाद 1950-52 में संसद की अस्थायी सदस्या रहीं। कांग्रेस कार्यकारिणी में उन्होंने सन् 1948-51 में सदस्या के नाते तथा 1958-60 में महामंत्री के नाते काम किया। बीच में सन् 1951 में कांग्रेस से त्यागपत्र देकर वे किसान-मजदूर प्रजा पार्टी में शामिल हो गई थीं और 1952 व 1957 के चुनावों में लोकसभा के लिए प्रजा समाजवादी पार्टी से ही निर्वाचित हुई थीं। इसके बाद पुन: कांग्रेस में शामिल हो सन् 1962 व 1967 में कांग्रेस के टिकट पर चुनाव जीतकर लोकसभा में आईं।

आचार्य जे.बी.कृपलानी जैसे असहिष्णु जन-नेता से विवाह करने के कारण तथा आपसी राजनीतिक मतभेदों के कारण अकसर लोगों को भ्रम होता था कि सुचेताजी का वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होगा; लेकिन यह उनका भ्रम था। सुचेता आचार्य जी के स्वभाव को झेलने के साथ उनकी सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखती थीं तथा आचार्य कृपलानी सुचेता के व्यक्तित्व को स्वत: विकसित होने देने के लिए पूरे अवसर प्रदान करते थे। उनका पारिवारिक और दांपत्य जीवन अत्यंत आनंदी किस्म का रहा, जो उन्हें अलग-अलग क्षेत्रों में कार्य करने के लिए प्रेरणा व शक्ति प्रदान करता था। सुचेताजी ने एक बार कहा था, "राजनीति में मैं अपने पति की वजह से हूँ, वरना मेरी रूचि तो मुख्यत: संगीत और सामाजिक कार्यों में ही है।" मुख्यमंत्री पद छोड़ने के कुछ समय बाद उन्होंने मुझसे एक भेंट में कहा था, "राजनीति में मेरी रूचि नहीं है; पर जो काम लेती हूँ उसे पूरी रूचि व दृढ़ता के साथ निभाने का प्रयत्न करती हूँ। वैसे मेरा असली कार्यक्षेत्र समाज है। अब मैं सामाजिक कार्यों में ही अपना अधिकांश समय व्यतीत करना चाहती हूँ।"

एक पुरानी तपोनिष्ठ कार्यकर्त्री के नाते ही उनके मुख्यमंत्रित्व काल में अपनी शिकायतें लेकर उनसे भेंट करने वाले नागरिकों में 60 प्रतिशत संख्या महिलाओं की होती थी। वे अधिकतर अपनी निजी समस्याएं लेकर उनके पास फरियाद करने पहुँच जाती थीं। कई बार सुचेताजी उन्हें समझा-बुझाकर भेज देतो तो कई बार अपने अधिकार का प्रयोग कर उनकी सहायता भी करतीं। एक मामले में एक पत्नी की शिकायत थी कि उसके पति ने कोशिश करके अपना तबादला वहाँ करवा लिया है, जहा उसकी प्रेमिका रहती है। उन्होंने उसके पति का तबादला रद्द करवा दिया। इसी तरह एक दूसरी महिला ने फरियाद करके अपनी पत्र-मित्र लड़की के पास जानेवाले अपने पति का पासपोर्ट रद्द करवा दिया था। यदि सुचेताजी मुख्यमंत्री बनने से पूर्व एक लोकप्रिय सामाजिक कार्यकर्त्री के रूप में विख्यात न होती तो ऐसी नितांत व्यक्तिगत समस्याएं लेकर नागरिक महिलाएं उनके पास नहीं जा सकती थीं।

दिसंबर 1974 में सड़सठ वर्ष की आयु में श्रीमती सुचेता कृपलानी का निधन हो गया। अपने अंतिम काल में वह कांग्रेस से निराश हो जनता पार्टी में शामिल हो गई थीं। पर राजनीति अब उन्हें विशेष रास नहीं आती थी। मुख्यमंत्री पद के दायित्व से मुक्त होने के बाद वे अपना ध्यान सामाजिक संस्थाओं में ही अधिक लगा रही थीं। राजधानी में 'लोक कल्याण समिति' जैसी उपयोगी संस्थाएं उन्हीं की देन हैं।

एक बूँद में समुद्र अँट गया
एक निमिष में समय सिमट गया

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

वसुधैव कुटम्बकम्

श्वेताभ त्रिपाठी
वरिष्ठ अभियंता, उत्पादन (शक्ति प्रभाग)

चिन्तन-मनन पवित्र आचरण मानव की परिभाषा है ।
धराधन्य की संतानों को सुखद भविष्य की आशा है ।।
पर उपकार निरत हर्षितमन सौख्यभाव स्नेहिल व्यवहार ।
जय अम्बेभारत सुरभारति चतुर्वेद वेदांगआभार ।।

गहन अन्धकार में निमग्न विश्व को सर्वप्रथम प्रकाश में रत (भारत) ऋषि प्रज्ञा ने चतुर्वेद-वेदांगोपनिषदों से आलोकित किया है, एतदर्थ समस्त मानवकुल को इनका हृदय से ऋणी होना चाहिए। वेदाश्रित भारतीय संस्कृति पृथ्वी पर निवास करने वाले सभी मनुष्यों को एक ही मानवकुल का सम्माननीय सदस्य स्वीकार करती है। इसमें समस्त मनुष्यों के मध्य वर्ण-धर्म, पंथ-सम्प्रदाय, भाषा-भूषा आदि विभिन्नताओं के कारण किसी भी प्रकार का विभेद सर्वथा-सर्वदा अस्वीकार्य है। वैदिक प्रज्ञा का उद्घोष है कि सभी मानव सब प्रकार से सभी सुख-सुविधाओं का समानरूप से उपभोग करें क्योंकि सबको अपने व्यक्तित्व विकास का समान अधिकार है। मानवकुल को दिया गया यह सन्देश कि अविद्वेष की भावना से सर्वथा रागद्वेष रहित निर्मलमन से सदा भ्रातृत्व की सद्भावना से सभी सौभाग्य के उत्तराधिकारी बनें। कारण, मनुष्य विधाता की सर्वोत्कृष्ट रचना है और कोई कथमपि एक दूसरे से कमवर या निम्न नहीं है- "अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते संभ्रातरोवावृधु:।"

ऋग्वेद 5/60/5

हम भारतीयों के लिए विश्वबन्धुत्व कोई नारा नहीं है, अपितु जीवन जीने की अनिवार्य आदर्श पद्धति है। भारतीय परम्परा स्वार्थ संकुचित पाशविक प्रवृत्ति की जमकर भर्त्सना करती है। जैसा कि राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने भी प्रत्येक मानव में परोपकार की प्रवृत्ति को जगाने के उद्देश्य से क्या खूब लिखा है-

यही पशुप्रवृत्ति है कि आप-आप ही चरे ।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।।

वैदिक ऋषि का भी स्पष्ट उद्घोष है कि प्रत्येक व्यक्ति स्नेह भावना से एक दूसरे की परिपालना करे-"पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वत: ।" यहां विश्व मानवकुल के प्रत्येक सदस्य को मानवता तथा बन्धुत्ववाद की भव्य भावना से परस्पर सहायता करने का निर्देश दिया गया है। कल्पना कीजिए, यदि सभी व्यक्ति एक दूसरे के सहायक हो जायें तो यह धरा सचमुच स्वर्ग बन जाएगी। कहीं कोई अनपढ़, असभ्य, क्रूर, असमर्थ या अस्वस्थ व्यक्ति दिखलाई नहीं देगा। शिक्षित व्यक्ति अशिक्षितों में ज्ञान का प्रकाश फैलाएंगे। असमर्थ-असहाय निर्धन व्यक्ति की सर्वविध सहायता समृद्ध व्यक्ति करेंगे जिससे सबके व्यक्तित्व का आत्यन्तिक विकास होगा। भारतीय संस्कृति के तीन आधार स्तम्भ दया, दान और त्याग हैं। इस आशावादी संस्कृति में मनुष्य की अवस्था सौ वर्ष मानकर इसे चार भागों में विभक्त किया गया है। वैदिक ऋषि का स्पष्ट कथन है कि प्रत्येक मनुष्य कर्मठ बने क्योंकि अकर्मण्यता पशुता है। मनुष्य विवेकशील प्राणी है। वह अपनी कल्पनाओं को मूर्त रूप दे सकता है। एतदर्थ उसे ईश्वर ने हस्तयुगल का वरदान दिया है। अत: प्रत्येक व्यक्ति का यह पुनीत कर्त्तव्य है कि वह न्यायमार्ग से स्वोपार्जित धन का भी त्यागपूर्वक ही उपभोग करे और किसी भी कीमत पर कदापि दूसरे के धन के प्रति लालच ना करे। त्यागपूर्वक भोग करने का संदेश मानव कुल का सदस्य होने की प्रथम शर्त है-

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चित् जगन्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध: कस्यस्विद्धनम् ।।

यजुर्वेद, 40/01

यह सर्वविदित है कि पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय कलह का प्रमुख कारण स्वयं के धर्मत: धन व भूभाग से असन्तुष्ट होकर दूसरों के धन-धरती पर कुदृष्टि डालना ही है। सोने की चिड़िया कहे जाने वाले भारतीय भू भाग पर, उसमें अन्तर्निहित श्री-सम्पदा पर आक्रान्ताओं ने बहुत अत्याचार किया है। अद्यापि वैश्विक युद्ध से मानवता चीत्कार कर रही है। मानव ही दानव बनकर असंख्य निर्दोषों को अग्नि की लपटों में झोंक रहा है। स्त्रियों व बच्चों के साथ क्रूरता की सारी सीमाएं पार की जा रही हैं। ऐसे में विश्वबंधुत्व का मार्ग ही एकमात्र संकटमोचक बन सकता है। वैदिक ऋषि की सुखद कामना है कि हे सूर्यदेव हम सभी मनुष्य सौ वर्ष तक अपने नेत्रों से संसार के सौन्दर्य का अवलोकन करें। हम सौ वर्ष तक शारीरिक व मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहकर कल्याणकारी कार्यों को करते हुए जीवन यापन करें। हम सौ वर्ष तक बुद्धि से परिपूर्ण रहें और कोई भी अकरणीय कार्य नहीं करें। हम सौ वर्ष तक वृद्धि को प्राप्त हों। हम सभी सौ वर्षों तक सुपुष्ट रहें। सौ वर्ष तक सभी बलवान रहें। हम मानवकुल के सभी सदस्य सौ वर्ष तक पवित्र रहें। इतना ही नहीं सौ वर्ष से भी अधिक काल तक सभी मनुष्य जीवित रहें। अथर्ववेद 67 सूक्त 1-8 कहने की आवश्यकता नहीं कि भारतीय संस्कृति कितनी उदार है तथा मानवीय मूल्यों के मूल्यवान पुष्पों से चतुर्दिक विश्व को अनुप्राणित सुरभित करने का दिव्य संदेश दे रही है। यह संसार सत्व, रज और तम इन तीन त्रिगुणों से निर्मित है। यहां देहरूपी देवालय में कब दानव प्रवेश कर जाए, समझना मुश्किल है। अत: जब निर्दोष, निर्बल मनुष्यों पर दानवी शक्तियां अत्याचार करने लगें, तब "शठे शाठ्यं समाचरेत्" के सिद्धान्तानुसार राक्षसी वृत्ति को जड़ से उखाड़ फेंकने में तनिक विलम्ब करने की भूल नहीं करनी चाहिए। मानव कल्यान के लिए राक्षसी प्रवृति को-अशांति-आतंक फैलाने वालों को शीघ्र ही उन पर अमोघ शस्त्रों का प्रहार करके उन्हें मटियामेट कर एक विश्व, एक परिवार और सभी मनुष्यों के सुखद भविष्य का परिक्षण करना चाहिए। यह ऋग्वेदिक सन्देश 30/15-17 में स्पष्टत: सुनाई देता है। यहीं कारण है कि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने 'जी-20' के वैश्विक सम्मेलन में महोपनिषद के महावाक्य "वसुधैव कुटुम्बकम्" को ध्येय वाक्य बनाकर पूरी वसुधा पर शांति व समृद्धि का साम्राज्य स्थापित करने का संकल्प दोहराया है। साथ ही आतंकवाद जैसे नृशंसकृत्य को पूरी मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा मानकर उसे जड़ से उखाड़ फेंकने का आह्वान किया है। सदियों से उपेक्षित अफ्रीकन देशों को 'जी-20' में शामिल कर "वसुधैव कुटुम्बकम्" को सच्चे अर्थों में अनुप्राणित किया है। विश्व कल्याण की कामना करने वाले सभी मनुष्य सत्कर्मों में निरत रहकर सौ वर्षों से भी अधिक मंगलमय जीवन व्यतीत करें-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा।

यजुर्वेद,40/20

वर्क फ्रोम होम

2020 में कोरोना आया और सब लगभग बदल सा गया। बाज़ार बंद, ऑफिस बंद, परिवहन बंद और ऐसा प्रतीत हुआ जैसे जीवन भी रुक गया हो। एक दम शान्ति! जिस भीड़ से कोफ़्त होती थी उस भीड़ के दर्शन को अब तरस गए। गाड़ियाँ, धुआँ, शोर सब को जैसे साँप सूंघ गया। प्रकृति ने भी मानव निर्मित कलयुग का परिहास किया और कुछ ही दिनों में अपने स्वप्रचालित *'रीसाइकल प्रोसैस'* द्वारा ख़ुद के नैसर्गिक सौन्दर्य को पुनः स्थापित किया। आसमान से धुआँ गायब, नदियों से गंदगी गायब और सड़कों से इंसान गायब। हर तरफ डर और बोरियत।

कुछ ही समय में लोगों ने अपने जीने के तरीके को बदल लिया। घर-परिवार के साथ का आनंद लेना शुरू कर दिया। कहीं लूडो और केरम में वही बचपन वाली कुशलता प्राप्त की गयी तो कहीं अपनी पाक-कला को निखारा गया। लेकिन कोरोना बीमारी से बचे हुए लोगों पर जो सबसे बड़ा साइड इफैक्ट हुआ वह था रोजगार पर खतरे की तलवार लटकना। एक तो ऐसे ही कोई न कोई रिश्तेदार बीमार था, उसकी टेंशन और उसपर भी नौकरी की चिंता।

शहर लॉक-डाउन हुए तो व्यवसाय को ठप्प होने से कौन रोक सकता था। अब व्यवसायी तो लाभ भी जनता से निकालता है और नुकसान को भी जनता पर डालने ही का प्रयास करता है। लोगों की नौकरियाँ गयी, तनख़्वाहें काटी गयी और भी अलग-अलग फोर्मूलों से कर्मचारियों पर *'कोरोना टैक्स'* लगाया गया। इस बीच कई बड़ी कंपनियों ने एक नया फॉर्मूला निकाला जिसको नाम दिया गया *'वर्क फ्रोम होम'*। फॉर्मूला आजमाया हुआ था लेकिन साप्ताहिक या मासिक तौर पर। हर रोज़ वर्क फ्रोम होम नामक कार्य-व्यवस्था पर किसी भी व्यवसायिक संगठन को शायद ही कभी कोई सहमति रही हो।

मनुष्य-सुलभ स्वभाव पर कार्य-व्यवस्था का ताना–बाना बुना जाता है। हर मालिक यह जानता है कि अगर कर्मचारी से ज्यादा से ज्यादा काम निकालना है तो उसे आँखों के सामने रखो। उसकी निगरानी रखो या फिर एक मनोवैज्ञानिक दबाव बना कर रखो। एक डर बना कर रखो। मनुष्य आलसी है, सुविधा पसंद करता है और एकांत मिलते ही अपनी मर्ज़ी का मालिक हो जाता है। इस तरह की आधारभूत धारणाओं या मनोविज्ञानों के आधार पर एक कंपनी की कार्य-निष्पादन की योज़ना का निर्माण होता है। ऐसे ही कुछ आधारों पर *वर्क-सिस्टम-डिज़ाइन* तैयार किया जाता है और *सिटिंग-व्यवस्था* लगाई जाती है।

अब अगर कोई कहे कि कर्मचारी कार्यालय आएगा ही नहीं तो यह सभी व्यवस्थाएँ लगभग शून्य हो जाती हैं। कम्युनिकेशन कैसे होगा। कार्य का मूल्यांकन भी करना है। उसमें गलतियों के सुधार के भी अपने तकाज़े हैं आदि आदि। बिना कार्यालय आए उच्च गुणवत्ता का कार्य-निष्पादन प्राप्त कर पाना-शायद ही किसी प्रबन्धक ने इस कार्य-व्यवस्था की कल्पना की होगी।

कुछ सालों पहले भारत-वर्ष में संदेशों के आदान-प्रदान हेतु पेज़र नामक उपकरण ने प्रवेश किया। लोग अपनी पेन्ट की लुप्पी में उसको फंसाए बड़ा रोब दिखाते थे। शुरुआती दौर में फिल्मों में भी इसे भाव दिया गया। फिर मोबाइल-फोन तकनीक से परिचय हुआ। इतने से ही व्यवसाय की दुनिया में सकारात्मक परिवर्तन आने आरंभ हो गए। जैसे-जैसे इंटरनेट और कंप्यूटर की दुनिया में हुए आविष्कारों का व्यवसाय की दुनिया में प्रयोग बढ़ता गया, दुनिया के व्यवसाय को पंख लगते गए। लेकिन स्मार्ट फोन ने तो पूरी दुनिया को ही बदल कर रख दिया। सूचना-तकनीक के विस्तार ने

व्यवसाय में व्याप्त मूल समस्याओं को लगभग उखाड़ फेंका। कहना न होगा कि अन्य तकनीकों से इतर *एलेक्ट्रोनिक व कम्युनिकेशन* तकनीकों ने व्यवसाय को शायद नए पंख लगा दिये हों। और जब ब्रॉडबैंड लोगों के घर पहुंचा तो घर से कार्य करना लगभग संभव लगने लगा और शायद इसी आधार पर कुछ बड़ी कंपनियों ने वर्क फ्रोम होम की कार्य व्यवस्था बनाकर अपने कर्मचारियों को एक प्रोत्साहन देना चाहा होगा।

उस समय इन कंपनियों को क्या पता था कि एक दिन परमानेंट वर्क फ्रोम होम का फॉर्मूला अपनाना पड़ सकता है। बहरहाल वर्क फ्रोम होम की स्थायी संकल्पना एक आपदा का परिणाम थी लेकिन यह एक *आपदा में अवसर* साबित हुई। सॉफ्टवेयर कंपनियों की तो जैसे पूरी समस्या ही हल हो गयी। हर सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पास अपना लैपटाप या डेस्कटॉप होता है। ब्रॉडबैंड कनैक्शन भी इनके पास लगभग मिल ही जाता है। कोडिंग लैंग्वेज भी यह लोग अपने सिस्टम में रखते ही हैं। कोई सॉफ्टवेयर जॉब करने के लिए और क्या चाहिए? कंपनियों ने सीधा निर्देश दिया कि सभी कर्मचारी घर से ही आउटपुट दो और टार्गेट सेट कर दिये। यह एक सकारात्मक शुरुआत थी कि अधिकतर टार्गेट्स समय से प्राप्त कर लिए गए। बाद में अन्य कंप्यूटर वर्क और सेल्स के जॉब भी इसी तर्ज़ पर चल निकले। अब कंपनी के साधन जैसे बिजली, पानी, इंटरनेट आदि की लागत बच रही थी और काम भी बराबर मिल रहा था। कंपनियों को दोहरा लाभ हुआ तो लॉक-डाउन के बाद भी कई कंपनियों में वर्क फ्रोम होम वाला सिस्टम चलता रहा। कई सॉफ्टवेयर कंपनियों ने ऑनलाइन इंटरव्यू करके इंजीनियर रखे और कुछ समय बाद उन इंजीनियरस ने ऑनलाइन ही त्यागपत्र भी दे दिया।

हालांकि उत्पादन प्रक्रिया में वर्क फ्रोम होम की अवधारणा लागू नहीं हो सकी। कुछ बीस-एक-साल पहले मैंने कुछ घरों में उत्पादन हेतु कुछ पुर्जों को तैयार करने का काम होते देखा था। जब मैंने उनसे पूछा तो उन्होने बताया कि कुछ छोटी कंपनियाँ इस तरह का काम प्रति पुर्जे के हिसाब से देती हैं। इसका मतलब उस समय उत्पादन को वर्क फ्रोम होम द्वारा *जॉब-वर्क* करवाया जाता था। जब मैंने इस बारे में और पढ़ा तो जाना कि चीन में इस तरह का उत्पादन कार्य बड़े स्तर पर होता है। जनसाधारण को प्रशिक्षण देकर और छोटी-मोटी ज़रूरी मशीन देकर इस तरह का काम करवाया जाता है। जैसे भारत में सिलाई का काम घर पर ही किया जाता है। चीन में उत्पादन प्रक्रिया को सस्ता बनाने के लिए सरकार ज़मीन भी लीज पर देती है।

वर्क फ्रोम होम से वांछित लक्ष्य शायद इसलिए प्राप्त हो सके क्योंकि वह कर्मचारियों के लिए भी सुविधाजनक रहा। महानगरों के ट्रेफिक और घर से कार्यालयों की लंबी दूरियों के चलते जो समय, और पैसा लगता था वो तो बच ही गया साथ ही घर में सुविधाजनक तरीके से काम करने का अवसर भी मिला। इसी प्रोत्साहन में ब्रॉडबैंड और मोबाइल फोन के खर्चे को खुशी-खुशी वहन किया जाता रहा। घर में ही टेबल-कुर्सी की व्यवस्था कराने से भी किसी कर्मचारी कोई आपत्ति नहीं। आज की भाग-दौड़ में इंसान अब सुकून तलाशने लगा है और घर जैसा सुकून और कहाँ। इसलिए वर्क फ्रोम होम जैसे अवसर को कर्मचारी हाथ से जाने नहीं देता।

विमल किशोर
सहायक आरेखण अधिकारी
जल संसाधन विभाग

हिन्दी का स्वाभिमान: दरार से आती रोशनी

साभार : बाजारवाद में हिन्दी

गणतंत्र दिवस पर विष्णु प्रभाकर को राष्ट्रपति के द्वार से अपमानित लौटना पड़ा तो उन्होंने पद्मभूषण लौटाने की पेशकश कर डाली। पता लगते ही राष्ट्रपति ने वाहन भेजा। उन्हें बुलाया, क्षमा मांगी। उनके साहित्य से लगाव दिखाते हुए 'आवारा मसीहा' पर देर तक बात की। अप्रिय प्रसंग का प्रीतिकर समापन हुआ।

विष्णु प्रभाकर का लेखकीय आत्मसम्मान और ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की राजकीय विनम्रता ने मिलकर साहित्य और सत्ता के अंत:संबंधों की नयी आचार संहिता रची है जो पिछले कुछ दशकों से खंडित या लुप्तप्राय हो गई थी, क्योंकि स्वाधीनता के पहले और बाद में भी हमें ऐसे राजनेता उपलब्ध थे जो स्वयं विद्वान, विचारक, संवेदनशील और सांस्कृतिक जगत से जुड़े थे। परन्तु धीरे धीरे यह नस्ल 'दुर्लभ प्रजाति' हो गई और अब तो राजनीति से शिक्षा, साहित्य, संस्कृति का चलन ही उठ गया है। ऐसे संवाद तो दूर, इनका संज्ञान लेना भी जरूरी नहीं समझा जाता। परिणामस्वरूप साहित्य, रंगमंच, विचार विवेचना आदि के क्षेत्र में राजनीति को लेकर जो तीखी प्रतिक्रिया है उसका कोई असर राजनीति पर नहीं दिखाई देता, बल्कि कुल उल्टा ही दिखता है। पिछले दिनों राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह में राष्ट्रपति ने फिल्मकारों से कहा था कि फिल्में लोगों को प्रेरणा देने का बहुत बड़ा माध्यम हैं, इसलिए मैं आपको एक कथ्य दे रहा हूं, हालांकि बहुत कठिन है। आप कुछ फिल्में राजनीति में भद्रता या उदारता (Nobility in Politics) पर बनाएं। इसका अंतर्अर्थ था कि इससे राजनीति को अच्छाई की प्रेरणा मिलेगी और उसमें पैदा हो गई फूहडता, विकृति, घृणित आचरण से देश को कमोबेश निजात मिलेगी। उनकी वेदना और क्षेभ साथ था। परन्तु मनुष्य के भीतर लोक-लाज और आत्मगलानि जैसे जो भाव होते हैं वे आलोचनात्मक रचना और विचार के ग्रहण-बिंदु हैं। प्रश्न यह है कि क्या राजनीति में ग्रहणशीलता के ये बिंदु बचे हैं? हां, अपवाद हर जगह होते हैं और यहां भी हैं, परन्तु सामान्यत: वर्तमान राजनीति गंदगी से लबालब भरी है। वह न केवल आत्मन्वेषण और आत्म-परिवर्तन के लिए तैयार है बल्कि भाव और विचार के संसार में घुसना ही नहीं चाहती।

ऐसी स्थिति में साहित्य और सोच एक निरर्थक प्रतिध्वनि की तरह जहां से चलते हैं, वहीं लौट आते हैं। यही कारण है कि आज संजीदा और संवेदनशील जगत में अपाहिज सरीखी कुठा, झुंझलाहट और निराशा पैदा हो गई है। ये सारे लक्षण प्रजातंत्र के भीतर तानाशाही पनपने के हैं। दल, क्षेत्र, जाति, परिवार और अंतत: व्यक्ति इसके ध्रुवीकरण के सापान हैं। तो आज साहित्य, शिक्षा और विचार से राजनीति के संबंधों के बारे में सवाल पूछने से पहले यह पूछना चाहिए कि हम एक स्वाधीन देश बने रहना चाहतें हैं या नहीं ?

अनेक देशों को आश्चर्य होता है कि अपने चारों ओर फैले तानाशाही के रेगिस्तान के बीच हिंदुस्तान ऐसी भयानक स्थिति में भी प्रजातंत्र के नखलिस्तान की तरह कैसे अक्षुण्ण जिंदा है? दो साल का आपातकाल तक इसे बर्दाश न हुआ, जबकि पड़ोसियों के यहां प्रजातंत्र ऐसे आता है जैसे लकड़ी के घर में गलती से छूटी एकाध दरार से रोशनी आती है। यों इसका श्रेय भारत की जनता को है, जिसके संस्कारों में प्रजातंत्र किसी प्रणाली से अधिक विचार और

अवधारणा में जीवित है। यहां राजतंत्र के गुण में भी जनतंत्र की अंतर्धरा प्रवाहित रही है। आत्मान्वेषण, मृत्यु से निर्भयता और विश्वकुटुंबभाव भारतीय दर्शन और जीवन में यक्सां हैं। यह पराधीन शरीर के भीतर भी एक स्वाधीन आत्मा की गुहार है। साहित्य और कलाओं के मौलिक संवेदन इसी से परिचालित हैं।

लेकिन ऐसा भी नहीं है कि साहित्य, सिनेमा, कला, शिक्षा या बौद्धिक और संवेदनात्मक क्षेत्रों में सब कुछ ठीक ठाक चल रहा है। उलटे ये कारोबार बनने को उत्सुक हैं। सिनेमा और मीडिया जिन हाथों में हैं उनमें कई माफिया के हैं और साहित्यिक 'व्यक्तित्व' के ग्राफ ने भी लगातार ढलान दिखायी है। 'साधना' की जगह 'अवसर' और 'राजनीति' का बैठ जाना इस हद पर पहुंच गया है कि राजनेता तक इस पर व्यंग्य करने लगे हें। जब माधवराव सिंधिया केन्द्रीय मंत्री थे और कोलकाता आये थे, एक सांस्कृतिक उपक्रम का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा था कि 'कलाकारों की मांग है कि सांस्कृतिक संस्थान राजनीतिज्ञों से मुक्त और स्वायत्त किये जाएं। परन्तु ऐसे कला संस्थानों में जो कुछ चलता है, उससे लगता है कि राजनीतिज्ञों को 'राजनीति' यहां से सीखनी चाहिए'। ऐसी हालत में यदि इन क्षेत्रों को पहले जैसे सम्मान से नहीं देखा जाता, तो इसमें शिकायत की क्या बात है? राजा भोज सम्मान दें तो किसी को 'हर्ष' भी तो होना चाहिए और भक्त कवि का वह माद्दा भी जो सीकरी को ठीकरी समझे। लालची कितना ही बड़ा हो, छोटा सा लालच भी उससे नाक रगड़वा लेता है। आज यह विचारणीय है कि सम्मान देने और लेने दोनों की पात्रता घट कर क्यों एक ऐसे बिंदु पर पहुंच चुकी है जहां न तो राजकीय शील बचा है, न साहित्यिक गरिमा।

ज्ञान, विज्ञान, साहित्य, कला की अभिज्ञता को छोड भी दें, तब भी मौजूदा सत्ताएं प्राय: देशभाव का प्रदर्शन नहीं करती हैं क्योंकि वे उसका अर्थ ही नहीं समझतीं। इसे राष्ट्रपति के ही एक संदर्भ से जानना आसान होगा। बच्चों के एक समारोह में राष्ट्रगान का प्रारंभ होते ही वे हाथ से रोक देते हैं। कहते हैं कि मेरे साथ गाओ और वे राष्ट्रगान को ठीक ठीक धुन में, सही उच्चारण में गाते हुए सारे श्रोताओं को खासकर नई पीढ़ी को एक तरह से प्रशिक्षण देते हैं। राष्ट्रपति कोई प्रशिक्षक या कंपोजर नहीं हैं, इसलिए यह प्रशिक्षण राष्ट्रगान का ही नहीं है, राष्ट्रीयता का है, देशभाव का है और संदेश है कि हम जो व्यक्त करते हैं, उसमें कहीं न कहीं हमारा अंतर्ग्रथित आशय पूरी तरह अभिव्यक्त होना चाहिए। खैर, उपर्युक्त दीक्षा के बरअक्स राजकाजी नेताओं के लिए आयोजित राष्ट्रगान प्रतियोगिता की मिसाल ले जो एक टी.वी. चैनल ने आयोजित की थी। कुछ विधायकों, मंत्रियों, प्रतियाशियों से उसने कहा कि राष्ट्रगान सुनाइए। इनमें से एक भी व्यक्ति दो-चार लाइन से अधिक न गा सका और कोई तो एकाध टूटी-फूटी बोल कर 'जय हे, जय हे' पर उतर आया। क्या राष्ट्र हमारे भीतर ऐसे ही रहता है। अधूरा, खंडित, भ्रष्ट। इसी संदर्भ में राष्ट्रपति की दीक्षा से संकेत लिए जा सकते हैं।

मेरा स्वाभिमान ही
मेरी सर्वश्रेष्ठ सम्पति है !!

ए.पी.जे.अब्दुल कलाम, जो बहुत आड़े वक्त में हमें मिले, एक दुर्लभ राष्ट्रपति के रूप में हमें याद रहेंगे। उनमें एक महान वैज्ञानिक, दार्शनिक, साहित्यकार, संवेदनशील, परिवर्तनकामी मनुष्य का निवास था और सबसे बड़ी बात कि उनमें एक बच्चा भी था – निष्कलुष, चंचल, निरभिमान और सतत जिज्ञासु। उक्त प्रसंग में उन्होंने आगे बढकर अपने ही विपक्ष में न्याय दिया और उस 'अपराध' के लिए क्षमा मांगी जो उन्होंने किया ही नहीं था। यह आचरण भी सत्ताधारियों के लिए एक सबक है कि उनकी जवाबदेही कितनी दूर तक है और द्वारपाल की मूल-गलती के लिए भीआतिथेय क्यों उत्तरदायी है। जिस रेल-दुर्घटना के लिए रेलमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने त्यागपत्र दिया था उस रेलगाड़ी के वे न ड्राइवर थे, न कंडक्टर। जवाबदेही और शील की यह भूली-बिसरी परंम्परा राष्ट्रपति ने फिर से याद दिलायी। साहित्यकार के प्रति विनम्रता प्रकट कर एक राष्ट्राध्यक्ष ने जनता की 'चित्तवृति' का मान रखा और राजनीति को जन से जुड़ने के लिए जरूरी माध्यम की पहचान करायी।

विष्णु प्रभाकर हिन्दी के सबसे वयोवृद्ध लेखक हैं और उस नस्ल से अलग हैं जो राजनीति, लालच और अवसरवादिता की गोद में बैठी है। खड़ी बोली हिन्दी का और उनका बचपन एक ही आंगन में खेला है। उन्होंने भले ही ऐसा कम लिखा हो जो साहित्य के शिखर को छूता हो पर वे साहित्यकार का पूरा प्रतिमान रचते हैं। वे हिन्दी के ऐसे सृजनरत श्रमिकों में हैं जिन्होंने अगली पीढ़ियों को भाषा और साहित्य की सड़क बना कर दी, सौजन्य, शील, निर्लोभ, संघर्ष और कुल मिला कर रचना कर्म की गरिमा सिखाई और बताया कि लेखनी और व्यक्तित्व के बीच सही आवाजाही से ही साहित्य ऊंचा और विश्वसनीय होता है। विष्णु जी साहित्य और पाठक के बीच 'स्लीप डिस्क' के सही हकीम हैं। इतना ही नहीं एक बड़े बांगला लेखक के साथ भावात्मक यात्रा करके उन्होंने हिन्दी भाषा का बृहत्तर बिंब बनाने में पहल की है। वे हिन्दी की तेजस्विता के विनम्र प्रतीक हैं। उन्होंने बीसवीं शती के सबसे बड़े मनुष्य गांधी की पाठशाला में कर्मण्यता, उदारता, दृढता, निर्भयता की दीक्षा ली और आज नयी शती के पहले प्रहर में गांधी के 'सत्याग्रह' को फिर प्रासंगिक बनाया है।

दो बुर्जुगों ने लगभग दफना दिए गए 'स्वदेशी आचरण' का दुर्लभ उदाहरण पेश किया है। दोनों में से किसे बड़ा-छोटा कहें, समझ में नहीं आता। कवि की रोचक लक्षणा में कहें – 'को घटि ए वृषभानुजा वे हलधर के वीर।' प्रजातंत्र में राष्ट्रपति से बतियाता 'आवारा मसीहा', 'इक्कीसवीं सदी का एक सपना' हो सकता है। इस पूरी घटना की प्रतीकात्मकता राष्ट्रीय दीक्षा के मार्ग खोलती है, इसलिए यहां उदधृत करूंगा कालिदास के इस भरत वाक्य को, जो नाटक के कथानक और पात्र से निकल कर कथा-पात्र-देश-काल की सीमा लांघ हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहा है :-

प्रवर्तितां प्रकृति हिताय पार्थिव: सरस्वती श्रुतिमहतां महीयसाम्।
ममापिच क्षपयतु नीललोहित: पुनर्भवं परिगत शक्तिरात्मभू: ।।

अर्थात - राजा (नेता) सदा प्रजा (जनता) के हित में लगे रहें। सरस्वती की संसार में पूजा हो। महान कवियों (लेखकों) की वाणी गौरवान्वित हो और शिव (कल्याण देव) की कृपा से मेरा (हमारा) भव-बंधन छूट जाये (यानी हम इस बाजारवादी सुनामी में न डूब मरे)।

वर्षा जल संचय की अनिवार्यता

साभार : जल हमारा कल

देश में जल संकट से उबरने के लिए जलसंचय आवश्यक है। वर्षा जल को संचित करना हमारे लिए अनिवार्य हो गया है। देश के कई राज्यों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग को अनिवार्य बना दिया गया है। यद्यपि इसका पालन कड़ाई से न होने के कारण अधिक फायदा नहीं हुआ तथा अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हुए हैं। मध्यप्रदेश में 140 वर्गमीटर या उससे अधिक क्षेत्रफल पर निर्मित होने वाले सभी भवनों में रेनवाटर हार्वेस्टिंग को अनिवार्य बना दिया गया है। ऐसा करने वालों को पहले साल संपत्तिकर में 6 फीसदी की छूट मिलने का प्रावधान है।

इसी प्रकार राजस्थान राज्य में सभी सरकारी भवनों में रेनवाटर हार्वेस्टिंग करवाना अनिवार्य कर दिया गया है। दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, बिहार, कर्नाटक और आंध्रप्रदेश में भी नई इमारतों में कानूनन, रेनवाटर हार्वेस्टिंग को अनिवार्य बना दिया गया है। कर्नाटक में रेनवाटर हार्वेस्टिंग करवाने पर संपत्ति कर में 5 वर्ष तक के लिए 20% की छूट मिलती है। पंजाब में लुधियाना और जालंधर नगर निगमों ने इसे जरूरी किया है। छत्तीसगढ़ जल्दी ही अपने राज्य में रेनवाटर हार्वेस्टिंग को अनिवार्य करने जा रहा है। गुजरात राज्य में यह निगम पहले से ही लागू है। सूरत महानगर पालिका ने तो रेनवाटर हार्वेस्टिंग के प्रति लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए इसमें आने वाले खर्च पर 50% सब्सिडी देने की योजना बनाई है। उत्तर प्रदेश के 54 जिलों में भूजल स्तर जमीनी सतह से 10 मीटर नीचे पाया गया है तथा 40 से 50 से. मी. प्रतिवर्ष की औसत गिरावट पाई गई है। प्रदेश की सरकार ने भवनों में वर्षा जल संचयन योजना (रूफ टाप रेन वाटर हार्वेस्टिंग) को अनिवार्य रूप से लागू किया था। इसके साथ ही सभी ग्रुप हाउसिंग योजनाओं में छतों तथा खुले स्थानों से प्राप्त बरसाती जल को परकोलेशन पिट्स के जरिए भूजल रिचार्जिंग को अनिवार्य कर दिया गया।

निसंदेह सरकारों ने अपना काम कर दिया है परंतु इसके प्रभावी अनुपालन, निरीक्षण, मानिटरिंग आदि नियमित होती रहे तो निश्चित रूप से बरसाती पानी को व्यर्थ बहने से रोक कर इसे संचित करके भूजल स्तर को ऊपर उठाया जा सकता है तथा गिरते भूजल स्तर को रोका जा सकेगा। इस दिशा में हमें किसी की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। यह कार्य स्वयं की पहल तथा दृढ़ इच्छा शक्ति से किया जा सकता है।

आश्चर्यजनक सत्य- अंतराष्ट्रीय जल संस्थान ने छत से प्राप्त होने वाले जल को अन्य स्त्रोतों से प्राप्त होने वाले जल की तुलना में श्रेष्ठ बताया है। केमिकल लैब की रिपोर्ट के अनुसार यह जल हर तरह के घातक लवणों से मुक्त होता है। इसमें हानिकारक बैक्टीरिया भी नहीं होते हैं और इसकी पी एच वैल्यू भी आदर्श 6.95 होती है। पी एच वैल्यू से यह पता चलता है कि पानी कितना प्राकृतिक व सामान्य है। 6.5 से 8.5 के बीच पी एच वैल्यू वाले पानी को सामान्य उपयोग के लायक माना जाता है।

भारत में वर्षा जल संरक्षण की स्थिति

भारत के हिस्से में दुनिया का पांच प्रतिशत पानी आता है परंतु हम लगभग 13 प्रतिशत पानी का इस्तेमान करते हैं। वहीं चीन में 12 प्रतिशत और संयुक्त राज्य अमेरिका में नौ प्रतिशत पानी का उपयोग किया जाता है। परंतु वर्षा जल संचय के मामले में भारत काफी पीछे है।

वर्षा जल संग्रहण क्षमता में आस्ट्रेलिया, चीन, मोरक्को, दक्षिण अफ्रीका, स्पेन और संयुक्त राज्य अमरीका जैसे देश हमसे अधिक वर्षा जल संग्रहीत करते हैं क्योंकि उन्हें पानी की वास्तविक कीमत का अंदाजा हमसे अधिक है। भारत में हर वर्ष बर्फ पिघलने और वर्षा जल के रूप में औसतन 4000 अरब घनमीटर पानी प्राप्त होता है। इसमें भूजल और नदियों में करीब 1869 अरब घनमीटर पानी मिलता है। भारत को मिलने वाले कुल पानी का प्रतिवर्ष लगभग 60% ही उपयोग हो पाता है। बाकी बचा हुआ पानी नदियों और सागरों में मिल जाता है। एक अनुमान के अनुसार देश में पानी की वास्तविक खपत 690 अरब घन मीटर सतही पानी तथा 432 अरब घनमीटर भूजल का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार भारत दुनिया का सबसे बड़ा जल उपभोक्ता बन रहा है। बढ़ती जनसंख्या के साथ प्रति व्यक्ति पानी की मांग बढ़ती जा रही है। योजना आयोग के अनुसार आज भारत को लगभग 82 लाख करोड़ लीटर पानी की जरूरत है, इसमें वर्ष 2025 तक सर्वाधिक मांग सिंचाई में बढ़ेगी। वर्ष 2010 में सिंचाई के लिए लगभग 700 अरब घन मीटर पानी की आवश्यकता है जोकी वर्ष 2025 तक बढ़कर 1000 अरब घनमीटर तक बढ़ जाने की संभावना है।

वर्षा जल संरक्षण ही एकमात्र विकल्प

जल संकट देश ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की एक गंभीर समस्या है। विशेषज्ञों का मानना है कि वर्षा जल संरक्षण को प्रोत्साहन देकर ही गिरते भू जल स्तर को रोका जा सकता है। यही एकमात्र विकल्प है। इसके अतिरिक्त जल प्रबंधन के द्वारा शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराया जा सकता है। यही एक स्थायी विकल्प सामने है। अभी भी समय है कि जल संकट की समस्या को गंभीरता एवं पूरी ईमानदारी के साथ स्वीकार करते हुए इसके लिए ठोस कार्रवाई की जाए वरना भविष्य में स्थिति और भयावह हो सकती है। आवश्यकता है कि तेजी से कम होते हुए भूजल को संरक्षित करने के लिए जल प्रबंधन पर ध्यान दिया जाए। इसमें कोई संदेह नहीं है कि भूजल पानी का प्रमुख महत्वपूर्ण स्त्रोत है और पृथ्वी पर होने वाली जलापूर्ति अधिकतर भूजल पर ही निर्भर है। कृषि, उद्योग, निर्माण कार्य, पेयजल आदि सभी कार्यों के लिए जल का दोहन भूजल के माध्यम से ही किया जा रहा है। इसलिए परिस्थिति गंभीर होती जा रही है। हालात इतने खराब होते जा रहे हैं कि गंगा-जमुना जैसी सदानीरा नदिंयों के हरे भरे इलाकों में भी पानी की कमी से धरती कहीं फट रही है तो कहीं तप रही है। उत्तरप्रदेश के बुंदेलखंड़, अवध और ब्रज क्षेत्र की घटनाएं इसका प्रमाण हैं।

भूगर्भ विशेषज्ञों का मानना है कि उत्तर प्रदेश के कई क्षेत्रों में भूजल के अंधाधुंध दोहन, उसके रिचार्ज न हो पाने के कारण जमीन की नमी खत्म होने, उसमें अधिक सूखापन आने, भूगर्भीय हलचल आदि के कारण जमीन की सतह पर अचानक गर्मी आने का प्रमुख कारण भूजल की कमी ही है। यह भयावह स्थिति खतरे का संकेत है, क्योंकि जब-जब पानी का अधिक दोहन होता है, तब तब जमीन के अंदर के पानी का उत्प्लावन बल कम होने या समाप्त होने पर जमीन धंस जाती है तथा उसमें दरारें पड़ जाती हैं। इसे उसी स्थिति में रोका जा सकता है जब भूजल के उत्प्लावन बल को बरकरार रखा जाए। पानी समुचित मात्रा में रिचार्ज होता रहे। यह तभी संभव है जब ग्रामीण-शहरी, दोनों जगह पानी का दोहन नियंत्रित हो, जल संरक्षण व भंडारण की समुचित व्यवस्था हो ताकि पानी जमीन के अंदर प्रवेश कर सके।

विश्व बैंक के अनुसार भूजल का सर्वाधिक उपयोग (लगभग 92%) तथा सतही जल का (लगभग 89%) कृषि कार्यो के लिए किया जाता है। इसी प्रकार लगभग 5% भूजल एवं 2% सतही जल उद्योगों में उपयोग होता है। जबकिघरेलु उपयोग के लिए 3% भूजल एवं 9% सतही जल का उपयोग होता है। आजादी के समय देश में प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति पानी की उपयोगिता 5 हजार क्यूबिक मीटर थी तथा देश की आबादी लगभग 40 करोड़ थी। वर्ष 2000 में यह उपयोगिता कम होकर 2 हजार क्यूबिक मीटर रह गई जबकि देश की आबादी 100 करोड़ को पार कर गई। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2025 तक यह उपयोगिता 1500 क्यूबिक मीटर रह जाएगी जबकि देश की आबादी 1.40 करोड़ हो जाएगी। इस प्रकार धीरे-धीरे प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति पानी की उपयोगिता कम होती जा रही है।

यह सत्य है कि जल संकट गहराने का प्रमुख कारण देश में बढ़ता हुआ औद्योगीकरण व नगरीकरण है। विश्व बैंक के अनुसार फैक्ट्रियां एक ही बार में उतना पानी जमीन से खींच लेती हैं, जितना एक गांव पूरे महीने में भी नहीं खींच पाता है। वास्तविकता की बात करें तो देश में, भूतल एवं सतही, विभिन्न स्त्रोतों से लगभग 2300 अरब घनमीटर जल उपलब्ध होता है। देश में सदानीरा नदियों का जाल है। देश में वार्षिक औसत वर्षा 100 सेंटीमीटर से भी अधिक होती है जिससे लगभग 4000 अरब घनमीटर पानी मिलता है। इस सबके बावजूद भी देश में पानी का अकाल है। वास्तव में वर्षाजल का 47% नदियों में चला जाता है। इसका आधा पानी तो उपयोग में आ जाता है परंतु उचित भंडारण के अभाव में समुद्र में चला जाता है। यदि वर्षा जल का संचय, संरक्षण, भंडारण तथा उचित प्रबंधन किया जाए तो काफी हद तक जल संकट समस्या का समाधान हो सकता है।

वर्षा की बूंदों को सहेजना जरूरी

हमारे देश के अधिकांश नगरों में भूजल के अंधाधुंध दोहन के कारण भूमिगत जल का स्तर निरंतर गिरता जा रहा है। नदी, तालाब, झीलें आदि सभी प्रदूषण, लापरवाही तथा उपेक्षा के शिकार रहे हैं। परिणामस्वरूप ये जल स्त्रोत सूख गए हैं और बढ़ते नगरीकरण के कारण इन जगहों पर कंक्रीट के जंगल (इमारतें) खड़े कर दिए गए हैं। उधर नदी जल बंटवारे या बांध व नहर से पानी छोड़े जाने को लेकर प्राय: शहरों का अन्य पड़ोसी शहरों/राज्यों से तनाव बढ़ता जा रहा है। नगरों में जल के असमान वितरण से समस्या और भी गंभीर हो चुकी है। एक ओर कुछ क्षेत्रों में पानी को लेकर हाहाकार मचा हुआ है, झगड़े, मारपीट तथा हत्याएं हो रही हैं और दूसरी ओर बढ़ती विलासिता और बढ़ते औद्योगीकरण व नगरीकरण से पानी की बरबादी हो रही है। व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, होटलों, सार्वजनिक स्थलों पर पानी व्यर्थ में ही बरबाद हो रहा है।

शहरी आबादी बढ़ने के कारण बड़े-बड़े बिल्डर्स अपनी बढ़ती जरूरतों के लिए शहरी क्षेत्रों में वैध-अवैध बोरिंग करके भूजल का मनमाने ढ़ंग से दोहन कर रहे हैं। परंतु रिचार्ज न होने के कारण भूजल स्तर नीचे गिरता जा रहा है। हाल ही में उत्तर प्रदेश के कुछ स्थानों में भूमिगत जल से खाली होती जमीन के फटने तक की घटनाएं समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई थी। नदियों के किनारे बसे शहरों ने इस प्राकृतिक जल स्त्रोत का इतना अधिक दोहन किया है कि आज वे नदियां इन शहरों की प्यास बुझाने में सक्षम नहीं है। तालाब, कुएं, झीलें, बावड़िया जैसे अन्य सतही जल स्त्रोत भी प्रदूषण, उपेक्षा व कुप्रबंधन के शिकार हो रहे हैं।

निसंदेह, वर्षा जल एक अनमोल प्राकृतिक उपहार है जो प्रतिवर्ष लगभग पूरी पृथ्वी को बिना किसी भेदभाव के मिलता रहता है। परंतु समुचित प्रबंधन के अभाव में वर्षा जल व्यर्थ में बहता हुआ नदी, नालों से होता हुआ समुद्र के खारे पानी में मिलकर खारा बन जाता है। अत: वर्तमान जल संकट को दूर करने के लिए वर्षा जलसंचय ही एक मात्र विकल्प है। यदि वर्षा जल के संग्रहण की समुचित व्यवस्था हो तो न केवल जल संकट से जूझते शहर अपनी तत्कालीन जरूरतों के लिए पानी जुटा पाएंगे बल्कि इससे भूमिगत जल भी रिचार्ज हो सकेगा। अत: शहरों के जल प्रबंधन में वर्षा जल की हर बूंद को सहेजकर रखना जरूरी है। हमारे देश में प्राचीन काल से ही जल संचय की परंपरा थी तथा वर्षा जल का संग्रहण करने के लिए लोग प्रयास करते थे। इसलिए कुएं, बावड़ी, तालाब, नदियां आदि पानी से भरे रहते थे। इससे भूजल स्तर भी ऊपर आता था तथा सभी जल स्त्रोत रिचार्ज हो जाते थे। परंतु मानवीय उपेक्षा, लापरवाही, औद्योगीकरण तथा नगरीकरण के कारण ये जल स्त्रोत मृत प्राय: हो गए। कई जल स्त्रोत तो कचरे के गड्ढे के रूप में बदल गए। कई जल स्त्रोतों पर अवैध कब्जे हो गए। मिट्टी और गाद भर जाने से उनकी जल ग्रहण क्षमता समाप्त हो गई और समय के साथ टूट-फूट गए हैं। अभी भी समय है कि इनमें से कई परंपरागत जल स्त्रोतों को पुनर्जीवित करने का प्रयास करके बचाया जा सकता है। वर्षा जल के संचय से इन जल स्त्रोतों को सजीव बनाया जा

यदि सरकार जन सहभागिता के आधार पर वर्षा जल संचय कार्यक्रम गंभीरतापूर्वक लागू करे तो इसका सकारात्मक प्रभाव अवश्य पड़ेगा। पूर्वी दिल्ली की "संजय झील" का पुराने रूप में लौटना इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। इससे आसपास के क्षेत्रों में भूजल स्तर बढ़ा है। उदयपुर की पिछौला झील तथा फतेहसागर झीलों के नीचे के क्षेत्रों में कई बावड़ियाँ हैं। एक समय अंधाधुंध जल दोहन से ये सूख चुकी थी परंतु वर्ष 1987-88 के सूखे से सबक लेकर इन बावड़ियों को वर्षा जलसंचय से ही पुनर्जीवित किया गया।

वर्तमान जल संकट को देखते हुए विभिन्न नगरों में वर्षा जलसंचय के लिए आधुनिक प्रणालियां लगाई जा रही हैं। दिल्ली में 100 वर्ग मीटर वाले भवनों में रेनवाटर हार्वेस्टिंग प्रणाली लगाना अनिवार्य कर दिया गया है। कुछ लोग स्वयं पहल करते हुए अपने घरों, अपार्टमेंटों में जल संचय प्रणाली लगवा रहे हैं। तथापि अभी भी व्यापक प्रयासों की आवश्यकता है तथा इस संदर्भ में प्रशासन व आम नागरिकों में वृक्षारोपण को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। आवश्यकता है ऐसे जन सहयोग अभियान की जो कि वर्षा जल की एक-एक बूंद को संचित करे तथा इस प्रकृति के अनमोल उपहार को संजोए रखे एवं जरूरत के अनुसार पानी का उपयोग करे।

नींद भी खुली न थी कि धूप ढल गई
पॉव जब तलक उठे कि जिन्दगी फिसल गई
पात-पात झर गए कि शाख-शाख जल गई
चाह तो निकल सकी न, पर उमर निकल गई

अच्छे स्वास्थ्य के लिए

दोस्तों अच्छे स्वास्थ्य और लम्बी जिंदगी पाने के लिए योगाभ्यास तो जरूरी है ही पर इसके साथ-साथ कुछ सामान्य नियमों और सावधानियों का पालन करना भी बहुत जरूरी है। इन नियमों और सावधानियों का पालन करने से दिनचर्या व्यवस्थित होने लगती है और हम लम्बे समय तक युवा बने रह सकते हैं। अच्छी और सक्रिय जीवनशैली का फायदा उम्र के किसी भी पड़ाव में मिल सकता है जिसके लिए दिनचर्या में थोड़ा सा परिवर्तन आपको स्वस्थ व दीर्घायु बना सकता है। बशर्ते आप कुछ चीजों को जीवनभर के लिए अपना लें और कुछ त्याजय चीजों को हमेशा के लिए अपने से दूर कर दें जैसे:-

- सबसे पहले हमारी दिनचर्या आरम्भ होती है सुबह उठने से तो हमे प्रात: पांच बजे तक अवश्य उठ जाना चाहिए और जागने के तुरन्त बाद कम से कम दो गिलास पानी पीना चाहिए। गर्मियों में आप सादा पानी और शरद रितु में गुनगुना पानी पी सकते हैं।

- सुबह उठकर जो पानी आपको पीना है वह घूँट-घूँट करके पीना है यानि कि शिप-शिप करके पीना है। क्योंकि सुबह जब हम उठते हैं तो जो लार हमारे मुंह में बनती है वह क्षारीय होती है और हमारे पेट में अम्ल बनता है। जब हम घूँट-घूँट करके पानी पीते हैं तो थोड़ा-थोड़ा छार पानी के साथ पेट में जाता है। जब अम्ल और छार आपस में मिलते हैं तो पेट शून्य हो जाता है अर्थात जो भी हमारे पेट में गन्दगी होती है वह सब बाहर निकल आती है फ्रेश होने के माध्यम से और टोयलेट के माध्यम से क्योंकि पेट साफ तो सभी रोग साफ।

- फिर सुबह-सुबह 2-3 मील तक रोज टहलें। अगर आप बच्चे हैं तो दौड़ भी सकते हैं और अगर बुजुर्ग है तो टहलें या फिर जोगिंग करें। टहलने के अलावा दौड़ना, साइकिल चलाना, घुड़सवारी, तैरना या कोई भी खेलकूद व्यायाम के अच्छे उपाय हैं। महिलाएं चक्की पीसना, रस्सी कूदना, पानी भरना, झाड़ू-पोछा लगाना आदि के दैनिक कामों से भी अच्छा व्यायाम कर सकती हैं। जब सुबह हम इस तरह के व्यायाम करते हैं तो हमारे शरीर से जो पसीना निकलता है वह गंदा होता है जिसके जरिये हमारी बहुत सी बिमारियां निकल जाती है जिससे शरीर स्वस्थ रहता है।

- भूख लगने पर ही भोजन करना चाहिए, बिना भूख के हमें कभी भी भोजन नहीं करना चाहिएं क्योंकि जब हम बिना भूख के भोजन करते हैं तो हमारा डायजेस्टिव सिस्टम मंद पड़ जाता है जिसकी वजह से हमें भूख नही लगती।

- भोजन करने के बाद पानी कभी भी नहीं पीना चाहिए। भोजन करने के कम से कम 45 मिनट के बाद ही पानी पीना चाहिए क्योंकि जब भी हम भोजन करते हैं तो हमारे पेट में एक अग्नि जलती है जिसे जठराग्नि कहते हैं जिसका काम भोजन को पचाना होता है। जब हम भोजन के तुरंत बाद पानी पी लेते हैं तो जठराग्नि मंद पड़ जाती है या फिर बुझ जाती है जिसकी वजह से हमारा किया हुआ भोजन पचने की बजाए सड़ता रहता है। इसलिए हमें भोजन करने के कम से कम 45 मिनट बाद ही पानी पीना चाहिए क्योंकि जब 45 मिनट के अन्दर यह अग्नि हमारे किये गए भोजन को पचा देती है तो उसे रस में बदलने के लिए पानी की आवश्यकता होती है इसलिए 45 मिनट बाद पानी जरूर पीना चाहिए।

- ठंडा पानी हमें कभी भी नहीं पीना चाहिए अर्थात फ्रिज में रखा हुआ पानी क्योंकि ठंडा पानी हमारे शरीर पर बहुत गलत प्रभाव डालता है। चूंकि हमारा पेट गर्म होता है जब ये ठंडा या फ्रिज का पानी पेट में जाता है तो पेट को वह पानी गर्म करना पड़ता है जिसके लिए शरीर को अतिरिक्त ऊर्जा खर्च करनी पड़ती है और रक्त संचार भी अधिक करना पड़ता है तथा ठंडा पानी हमारे शरीर में बनने वाले पाचक रस का तापमान भी कम कर देता है जिससे भोजन के पचने में कठिनाई होती है जिसकी वजह से हमारी किडनी, लीवर इत्यादि खराब भी हो सकते हैं इसलिए हमें ठंडे पानी का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

- शाम का भोजन जितनी जल्दी हो सके कर लेना चाहिए और शाम के भोजन के पश्चात कम से कम एक किलोमीटर अवश्य टहलना चाहिए जिससे हमारा भोजन आसानी से पच जाए। भोजन हमेशा चबा-चबा कर खाना चाहिए उसे जल्दी-जल्दी सटकना नहीं चाहिए क्योंकि जब हम भोजन चबा-चबा कर नहीं करते तो भोजन को पचने में बहुत समय लगता है।

- एक दूसरे के विपरीत भोजन का सेवन नहीं करना चाहिए जैसे दूध-दही, खीर-मट्ठा, दही के साथ उड़द की दाल इत्यादि क्योंकि ऐसा भोजन करने से पाचन क्रिया पर गलत प्रभाव पड़ता है जिससे पेट में दर्द या उल्टियां भी आ जाती हैं।

- पानी हमेशा बैठकर और धीरे-धीरे पीना चाहिए क्योंकि खड़े होकर पानी पीने से घुटनों की बीमारी हो जाती है इसलिए हमेशा बैठकर पानी पीयें।

- भूख से कम खाओं अर्थात आधा पेट खाओं, चौथाई पानी के लिए एवं चौथाई पेट हवा के लिए खाली छोड़ो। भोजन में अंकुरित अन्न शामिल करो क्योंकि अंकुरित अन्न में पौष्टिकता एवं खनिज लवण गुणात्मक मात्रा में बढ़ जाते हैं।

- दोपहर के भोजन के थोड़ी देर बार छाछ पीना और रात को सोने के पहले गर्म दूध पीना अमृत समान है।

- मौसम की ताजा हरी सब्जियां और ताजे फल अवश्य खाओं जितना हो सके कच्चे खाओ या आधी उबली और कम मिर्च-मसाले की सब्जियां खाओं।

- जितना अधिक हो सके पैदल चलने की आदत डालें।

(दलीप कुमार सेठी)
उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.)

जिन्दगी का तजुर्बा

गुरूर किस बात का करना है ?
संसार में कुछ भी ऐसा नहीं,
जो साथ जाता है।

जीते ज़ी इज्जत मिल गई तो शुक्र मनाइए।
मरने के बाद तो तुरंत फर्श पे रख दिया जाता है।

नदी नाले जैसे समुन्दर में मिल जाते है,
अंतिम समय में राजा रंक भी एक सामान हो जाते हैं।

कितना भी करीबी रिश्ता हो ,
छूने पर तुरंत नहाने जायेंगे
लेकिन सोना चांदी को तुरंत संभालेंगे।

नसीहत पसंद आती नहीं है।
वसीयत से नज़र जाती नहीं है।

गुरूर किस बात का है साहब ?
जब तक जीयें, आत्म सम्मान के साथ जीयें।

बच्चे काबिल निकल गए तो तस्वीर पे फूल माला टिक जायेगी,
नहीं तो धुल अपना हक़ उसमे जमा लेगी।

जब तक रहिये, शान से रहिये, खुश रहिये, मस्त रहिये,
अपने अस्तित्व को बनाए रखिये।

कासीराजु श्रीनिवास, डी.ई.ओ.
वाप्कोस परियोजना कार्यालय, हैदराबाद

जीवन में 7 का पहाड़ा (टेबल) का बहुत महत्व है, पर इसकी जानकारी कम लोगों को रहती है

7x1 = 7	....	बचपन
7x2 = 14	....	जवानी की शुरुआत
7x3 = 21	....	शादी की उम्र
7x4 = 28	....	बच्चे होना
7x5 = 35	....	सुखी संसार
7x6 = 42	....	सांसारिक ज़िम्मेदारी
7x7 = 49	....	बुढ़ापे की शुरुआत
7x8 = 56	....	रिटायरमेंट की शुरुआत
7x9 = 63	....	षष्ठी पूर्ति के कार्यक्रम
7x10 = 70	....	संसार से विदा लेने का समय कितना महत्वपूर्ण है
7 का पहाड़ा	....	इसलिए हस्ते रहो, प्यार से रहो, यह ज़िन्दगी न आएगी दोबारा।

कासीराजु श्रीनिवास, डी.ई.ओ.
वाप्कोस परियोजना कार्यालय, हैदराबाद

पापा (पिता) को समझने में पूरे 60 साल
एक पुत्र की नजर में उम्र के अलग-अलग पड़ाव पर पिता

4 वर्ष: मेरे पापा महान है।

6 वर्ष: मेरे पापा सब कुछ जानते है, वह सबसे होशियार है।

10 वर्ष: मेरे पापा अच्छे है, परन्तु गुस्से वाले है।

16 वर्ष: मैं जब छोटा था, तब मेरे पापा मेरे साथ अच्छा व्यवहार करते थे।

14 वर्ष: मेरे पापा वर्तमान समय के साथ नहीं चलते। सच पूछो तो उनको कुछ भी ज्ञान नहीं है।

18 वर्ष: मेरे पापा दिनों दिन चिड़चिड़े और अव्यहारिक होते जा रहे है।

20 वर्ष: ओहो... अब तो पापा के साथ रहना ही असहनीय हो गया है... मालूम नहीं मम्मी इनके साथ कैसे रह पाती है।

25 वर्ष: मेरे पापा हर बात में मेरा विरोध करते है, कौन जाने, कब वह दुनिया को समझ सकेंगे।

30 वर्ष: मेरे छोटे बेटे को संभलना मुश्किल होता जा रहा है .. बचपन में मैं अपने पापा से कितना डरता था।

40 वर्ष: मेरे पापा ने मुझे कितने अनुशासन से पाला था, आजकल के लड़कों में कोई अनुशासन और शिष्टाचार ही नहीं है।

50 वर्ष: मुझे अश्चर्य होता है, मेरे पापा ने कितनी मुश्किलें झेलकर हम भाई-बहनों को बड़ा किया। आजकल तो एक संतान को बड़ा करने में ही दम निकल जाता है।

55वर्ष: मेरे पापा कितनी दूरदृष्टि वाले थे, उन्होंने हम भाई-बहनो के लिए कितना व्यस्थित आयोजन किया था। आज वृद्धावस्था में भी वह सयंमपूर्वक जीवन जी सकते हैं।

60 वर्ष: मेरे पापा महान थे, वह ज़िंदा रहे जब तक हम सभी का पूरा ख़याल रखा।

सच तो यह है कि ... पापा (पिता) को अच्छी तरह समझने में पूरे **60** साल लग गए।

कासीराजु श्रीनिवास, डी.ई.ओ.
वाप्कोस परियोजना कार्यालय, हैदराबाद

राजभाषा संबंधी कुछ आवश्यक जानकारी

1. भारत संघ की राजभाषा हिन्दी की लिपि कौन सी है। **(देवनागरी)**
2. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष में कितनी बैठकें होनी चाहिएं। **(चार बैठकें)**
3. राजभाषा अधिनियम 1963 का संशोधन किस वर्ष किया गया? **(1967)**
4. संविधान में हिंदी को किस रूप में स्वीकार किया गया है। **(राजभाषा)**
5. संविधान का अनुच्छेद 347 किससे संबंधित है। **(राज्यों के बीच पत्राचार की भाषा से)**
6. संविधान में हिंदी संबंधी प्रावधानों की व्यवस्था किन अनुच्छेदों में है। **(अनुच्छेद 343-351)**
7. क' क्षेत्र में फाइलों पर टिप्पणियां कितने प्रतिशत लिखनी होती है। **(75 प्रतिशत)**
8. किस देश में सर्वाधिक भाषाएं बोली जाती हैं। **(भारत)**
9. माननीय संसदीय राजभाषा समिति की कितनी उप समितियां हैं। **(तीन)**
10. माननीय संसदीय राजभाषा समिति में कितने सदस्य होते हैं । **(तीस - लोकसभा से 20 सदस्य और राज्यसभा से 10 सदस्य)**
11. संसदीय राजभाषा समिति अपनी रिपोर्ट किसे भेजती है। **(राष्ट्रपति को)**
12. हिंदी में प्राप्त पत्र का उत्तर हिंदी में दिया जाना चाहिए, यह प्रावधान किस नियम के अन्तर्गत किया गया है। **(राजभाषा नियम 1976 के नियम-5 के अन्तर्गत)**
13. वार्षिक कार्यक्रम किसके द्वारा बनाया जाता है। **(राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय)**
14. राजभाषा नियम 1976 में कुल कितने नियम है। **(12 नियम)**
15. हिंदी को राजभाषा बनाने का निर्णय किसके द्वारा लिया गया। **(संविधान सभा)**
16. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अन्तर्गत राजभाषा अनुपालन संबंधी कौन उत्तरदायी है। **(कार्यालय प्रमुख)**
17. राजभाषा आयोग की सिफारिशों को लागू करने हेतु कौन सी समिति बनाई गई थी । **(संसदीय राजभाषा समिति)**
18. शासकीय प्रयोजनों के लिए राजभाषा नियम 1976 किस राज्य पर लागू नहीं होता। **(तमिलनाडू पर)**
19. पहला 'विश्व हिंदी सम्मेलन' कब और कहां हुआ। **(10 जनवरी, 1974 को नागपुर में)**
20. स्टेशनरी तथा अन्य मदों पर द्विभाषी लेख छापना, यह प्रावधान किस नियम के अन्तर्गत किया गया है। **(राजभाषा नियम 1976 के नियम-11 के अन्तर्गत)**

(दलीप कुमार सेठी)
उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.)

राजभाषा नियम/The Official Language Rule, 1976

राजभाषा कार्यान्वयन को ध्यान में रखते हुए राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों को निम्नानुसार तीन क्षेत्रों में बांटा गया है/ States and Union Territories are divided as under into three keeping in view of Official Language Implementation:

"क" क्षेत्र – बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड राज्य, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र।

"Region A" - States of Bihar, Chattisgarh, Haryana, Himachal Pradesh, Jharkhand, Madhya Pradesh, Rajasthan, Uttar Pradesh, Uttarakhand, National Capital Territory of Delhi & Andaman and Nicobar Islands Union Territory

"ख" क्षेत्र – गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन और दीव तथा दादरा एवं नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।

"Region B" - States of Gujarat, Maharashtra and Punjab and Union Territories of Chandigarh, Daman & Diu and Dadra & Nagar Haveli

"ग" क्षेत्र – "क" और "ख" ' क्षेत्रों में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र

"Region C" All other States not included in the "A" and "B" Regions or Union Territories

कारवाँ गुजर गया

स्वप्न झरे फूल से,
मीत चुभे शूल से,
लुट गये सिंगार सभी बाग़ के बबूल से,
और हम खड़ेखड़े बहार देखते रहे।
कारवाँ गुज़र गया, गुबार देखते रहे!

नींद भी खुली न थी कि हाय धूप ढल गई,
पाँव जब तलक उठे कि ज़िन्दगी फिसल गई,
पातपात झर गये कि शाख़शाख़ जल गई,
चाह तो निकल सकी न, पर उमर निकल गई,
गीत अश्क बन गए,
छंद हो दफन गए,
साथ के सभी दिऐ धुआँधुआँ पहन गये,
और हम झुकेझुके,
मोड़ पर रुकेरुके
उम्र के चढ़ाव का उतार देखते रहे।
कारवाँ गुज़र गया, गुबार देखते रहे।

क्या शबाब था कि फूलफूल प्यार कर उठा,
क्या सुरूप था कि देख आइना सिहर उठा,
इस तरफ ज़मीन उठी तो आसमान उधर उठा,
थाम कर जिगर उठा कि जो मिला नज़र उठा,
एक दिन मगर यहाँ,
ऐसी कुछ हवा चली,
लुट गयी कलीकली कि घुट गयी गलीगली,
और हम लुटेलुटे,
वक्त से पिटेपिटे,
साँस की शराब का खुमार देखते रहे।
कारवाँ गुज़र गया, गुबार देखते रहे।

हाथ थे मिले कि जुल्फ चाँद की सँवार दूँ,
होठ थे खुले कि हर बहार को पुकार दूँ,
दर्द था दिया गया कि हर दुखी को प्यार दूँ,
और साँस यूँ कि स्वर्ग भूमी पर उतार दूँ,
हो सका न कुछ मगर,
शाम बन गई सहर,
वह उठी लहर कि दह गये किले बिखरबिखर,
और हम डरेडरे,
नीर नयन में भरे,
ओढ़कर कफ़न, पड़े मज़ार देखते रहे।
कारवाँ गुज़र गया, गुबार देखते रहे!

माँग भर चली कि एक, जब नई नई किरन,
ढोलकें धुमुक उठीं, ठुमक उठे चरनचरन,
शोर मच गया कि लो चली दुल्हन, चली दुल्हन,
गाँव सब उमड़ पड़ा, बहक उठे नयननयन,
पर तभी ज़हर भरी,
गाज एक वह गिरी,
पुँछ गया सिंदूर तारतार हुई चूनरी,
और हम अजानसे,
दूर के मकान से,
पालकी लिये हुए कहार देखते रहे।
कारवाँ गुज़र गया, गुबार देखते रहे।

गोपालदास नीरज
कवि एवं गीतकार
(4 जनवरी, 1925 से 19 जुलाई, 2018)

आईएसओ 9001:2015

वाप्कोस लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल शक्ति मंत्रालय
(A Government of India Undertaking)
Ministry of Jal Shakti

पंजीकृत कार्यालय : 5वां तल, ''कैलाश'', 26, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली - 110 001
दूरभाष: +91-11-23313131, 23313881, फैक्स: +91-11-23313134, 23314924, ई-मेल: ho@wapcos.co.in

निगमित कार्यालय: 76-सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-18, गुरूग्राम-122015, हरियाणा
दूरभाष: +91-124-2399428, फैक्स: +91-124-2397392, ई-मेल: mail@wapcos.co.in
ई-मेल: hindi@wapcos.co.in, वेबसाइट : http://www.wapcos.co.in